नैतिक शिक्षा

कक्षा 8

ekfyd f’k{kk foHkkx] gfj;k.kk

PRINT LINE

आमुख

आज विश्व में विज्ञान बहुत तीव्रगति से प्रगति कर रहा है। वैज्ञानिक व औद्योगिक क्रान्तियों ने धर्म व मोक्ष की जगह अर्थ और काम पुरुषार्थ को इतना प्रबल बना दिया है कि परम्परागत जीवन मूल्यों का निरन्तर पराभव होता जा रहा है। भोगवादी संस्कृति उत्तम जीवन मूल्यों को नष्ट करने पर तुली है, जिससे लोग नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करके स्वार्थसिद्धि में प्रवृत्त हो रहे हैं। सम्पूर्ण राष्ट्र इस विभीषिका से त्रस्त है और संशय के धरातल पर खड़ा है। वर्तमान शताब्दी एवं भविष्य के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।

शिक्षा अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है और हमारी दृष्टि को दिव्य बनाती है। शिक्षा ही एक ऐसा अनूठा माध्यम है, जिससे छात्र–जीवन में मूल्यों की स्थापना की जा सकती है। यह शिक्षा का बुनियादी दायित्व है कि वह जीवन को त्रिकालसम्मत मूल्यों पर आधारित करे और ऐसी शक्तियों पर अंकुश लगाए, जो इन शाश्वत व चिरन्तन मूल्यों का ह्रास करती हैं। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है– छात्र का चारित्रिक विकास। यह तभी सम्भव है, जब शिक्षा को नैतिकता से जोड़ा जाए। इसके लिए ^ufrd eY;* आधारभूत सामग्री हैं। इससे जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होगा तथा भौतिकवाद के भटकाव से समाज को बचाया जा सकेगा। साथ ही अनैतिक व अमानवीय प्रवृत्तियों पर अकुंश भी लग सकेगा, करुणा व दया के भाव प्रस्फुटित होंगे तथा मन की संवेदना का विस्तार होगा। नैतिक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है, जो हमारे जीवन को प्रशस्त बनाती है और हमें संस्कृति से जोड़े रखती है। शिक्षा में नैतिकता का समावेश होने पर ही समाज में व्याप्त चारित्रिक पतन से मुक्ति मिल सकती है।

नैतिक शिक्षा का परीक्षण पुस्तकों में न रहकर जीवन के आचरण में होता है। इन जीवन मूल्यों को धारण करने का उपयुक्त समय विद्यार्थी जीवन ही है। इसी को ध्यान में रखते हुए नैतिक शिक्षा पर आधारित विषयों का संकलन इस पुस्तक में किया गया है। नैतिकता मानवता की सांझी धरोहर है। नैतिक शिक्षा में विश्व का सारा चिन्तन व दर्शन समाया हुआ है। इसका सीधा सम्बन्ध व्यवहार दर्शन से है। नैतिकता का निवास शब्दों में कम और व्यवहार में अधिक होता है। सच्चे आचरण से जुड़ी नैतिक शिक्षा छद्म नहीं सिखाती है। इस पुस्तक में सूक्तियों, प्रेरक प्रसंगों आदि के माध्यम से नैतिक शिक्षा को व्यावहारिक जीवन में आकार देने का प्रयास किया गया है, जिससे हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की परम्पराएँ कायम रहेंगी और निरन्तरता व बदलाव को भी गति मिलेगी।

आशा है इस पुस्तक में आए उच्च नैतिक मूल्य विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए नेतृत्व एवं अनुयायित्व की प्रवृत्तियों का विकास कर सकेंगे। साथ ही भारत की सार्वभौमिक सांस्कृतिक धरोहर को उन तक पहुँचा सकेंगे। इसे पढ़कर वे देशभक्त, संस्कारी व प्रतिभाशाली बनेंगे। हम उन सभी लेखकों व सुधीजनों के आभारी हैं, जिन्होंने अमूल्य योगदान देकर इस पुस्तक को अपनी रचनाओं से सुशोभित किया है। सुधी पाठकों के विचार अवश्य ही इस दिशा में हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

d'kuh vkuUn vjkMk
vfrfjDr e[; lfpo] fo|ky; f'k{kk
gfj;k.kk] p.Mhx<

प्राक्कथन

आज समूचे विश्व में नैतिक मूल्य रेत के कणों के समान बिखरते चले जा रहे हैं। समाज में मानसिक तनाव एवं पारिवारिक, सामाजिक व साम्प्रदायिक रूप से विलगाव दिखाई पड़ रहा है। भारत प्राचीन काल से ही अपने नैतिक मूल्यों के प्रति सजग रहा है। हम अपनी उस सम्पन्न परम्परा के ऋणी हैं जो आज भी हमारा पथ आलोकित कर रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि भावी पीढ़ी अपने गौरवमयी इतिहास से परिचित हो तथा अपनी सभ्यता व संस्कृति को जाने। विद्यार्थी अपने जीवन में ईमानदारी, सच्चाई, परोपकार, सेवाभाव, कर्त्तव्यपालन व समयपालन जैसे गुणों को अपनाकर चारित्रिक दृष्टि से दृढ़ व सदाचारी बनें। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए नैतिक शिक्षा की इन पुस्तकों का निर्माण किया गया है जिनमें भावात्मक एकता, सामाजिक न्याय, समानता, प्रकृति प्रेम, पर्यावरण, राष्ट्र प्रेम व सेवाभाव आदि को समुचित स्थान दिया गया है ताकि बालकों में आदर्श एवं श्रेष्ठतम गुणों का विकास हो।

नैतिक शिक्षा के अध्ययन हेतु कक्षावार अध्यापन की व्यवस्था होगी। प्रतिदिन प्रार्थना सभा के समय विद्यार्थियों/आचार्यों द्वारा नैतिक शिक्षा में संकलित पाठों पर आधारित विचार व्यक्त किए जाएँगे। नैतिक शिक्षा विषय को पढ़ाने का दायित्व विशेष रूप से भाषा के आचार्यों/शिक्षकों का होगा। यदि इन विषयों के शिक्षकों का वर्कलोड पूरा हो तो अन्य विषय के अध्यापक नैतिक शिक्षा का अध्यापन कार्य करेंगे।

नैतिक शिक्षा विषयक पुस्तक लेखन के प्रेरणा स्वरूप माननीय श्री दीनानाथ बत्रा, अध्यक्ष शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के प्रति विभाग कृतज्ञता व्यक्त करता है। मानव मूल्य विश्वकोश के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मपाल मैनी, प्रो. श्रीधर वासिष्ठ, पूर्व कुलपति श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (मानित विश्वविद्यालय) नई दिल्ली, प्रो. चाँदकिरण सलूजा, सेवानिवृत्त आचार्य, केन्द्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय, तेजपाल शर्मा, सेवानिवृत्त प्रो., श्रीजगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, उड़ीसा तथा सम्पूर्ण पुस्तक लेखन समिति के प्रति विभाग आभार व्यक्त करता है।

जिन कवियों, रचनाकारों व लेखकों ने अपनी उत्कृष्ट रचनाओं को इस पुस्तक में शामिल करने की सहर्ष अनुमति प्रदान की उनके प्रति भी हम आभार प्रकट करते हैं।

अथक प्रयासों के बावजूद भी यदि किसी रचनाकार का नाम छूट गया हो तो उनके प्रति भी आभार प्रकट करना हम अपना परम कर्त्तव्य मानते हैं। भविष्य में नाम ज्ञात होने पर आगामी संस्करणों में शामिल कर लिया जाएगा। पुस्तक के चित्रांकन व साज सज्जा के लिए मीडिया एक्सिस तथा टंकण कार्य के लिए पिंकी व देवानन्द का भी आभार प्रकट करते हैं।

jkgrkl flag [kjc
fun'kd
ekfyd f'k{kk] gfj;k.kk
ipdyk

पुस्तक निर्माण समिति

l j{k d

- श्रीमती केशनी आनन्द अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा, हरियाणा, चण्डीगढ़।
- श्री रोहतास सिंह खरब, निदेशक मौलिक शिक्षा, हरियाणा, पंचकूला।
- श्री आलोक वर्मा, राज्य परियोजना निदेशक, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद्।

ekxn'ku

- श्रीमती स्नेहलता, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।
- डॉ. किरणमयी, संयुक्त निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।
- श्री रवीन्द्र फौगाट, अध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

ijke'k

- डॉ. रामकरण डबास, सेवानिवृत्त भाषा विशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली।
- डॉ. नन्दलाल महता, पूर्व विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविद्यालय, गुड़गाँव।
- डॉ. मोहम्मद हनीफ खान सहाचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली

l;kt d

तनु भारद्वाज, विषय विशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

lg&l;kt d

सीमा वधवा, कनिष्ठ विशेषज्ञ, राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।

y[ku e.My

- कान्ता कश्यप, सेवानिवृत्त भाषा विशेषज्ञ, रा. शै. अनु. एवं प्रशि. परिषद्, हरियाणा, गुड़गाँव।
- घमण्डीलाल अग्रवाल वरिष्ठ बाल साहित्यकार व सेवानिवृत्त अध्यापक हरियाणा शिक्षा विभाग।
- डॉ. जितेन्द्र सिंह, प्राध्यापक, रा.व.मा.वि. घासेड़ा मेवात।
- डॉ. पंकज गौड़, प्राध्यापक, रा.व.मा.वि. अटेली।
- डॉ. ऋषिपाल शर्मा, प्राध्यापक, डाइट मोहड़ा, अम्बाला।
- डॉ. बलवान सिंह, प्राध्यापक, रा.व.मा.वि. कैराका नूँह।
- डॉ. राजेन्द्र सिंह, प्राध्यापक, रा.व.मा.वि. नारा पानीपत।
- शिखा शर्मा, प्राध्यापिका, रा.व.मा.वि. भौड़ाकलाँ, गुड़गाँव।
- डॉ. विजय इन्दु, प्राध्यापिका रा.व.मा.वि कादीपुर, गुड़गाँव।
- नितेश शर्मा, प्राध्यापक, रा.व.मा.वि मीरान भिवानी।
- डॉ. मैत्रेयी, अध्यापिका रा.व.मा.वि. झाड़सा, गुड़गाँव।
- राजेश कुमार, अध्यापक रा.मा.वि. डूमा (फर्रुखनगर) गुड़गाँव।
- कु. पुष्पा, खण्ड संसाधन व्यक्ति पिल्लूखेड़ा, जींद।

विषय-सूची

1.	वन्दना	1
2.	योगासन एवं प्राणायाम	3
3.	सूक्ति सुधा	8
4.	प्रेरक प्रसंग • स्वामी जी का देशप्रेम • तीन छन्नी परीक्षण	11
5.	नीति के दोहे	15
6.	दया धर्म का मूल है	18
7.	मनुष्य के आन्तरिक शत्रु	21
8.	रानी दुर्गावती	26
9.	प्रकृति वर्णन	31
10.	अनूठा बलिदान	34
11.	भास्कराचार्य	37
12.	देश की धरती	41
13.	ऊधम सिंह	43
14.	गुरुपर्व	45
15.	स्वावलम्बन	48
16.	जन–जन को यही सन्देश, नशा मुक्त हो अपना देश (भाग – 3)	51
17.	1857 की क्रान्ति में 'रोहनात' का योगदान	55
18.	रेज़ांग ला : ज़रा याद करो कुर्बानी	59
19.	मुझे यह अच्छा नहीं लगता	63

1 वन्दना

हे जन्मभूमि भारत, हे कर्मभूमि भारत,
हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत,
जीवन–सुमन चढ़ाकर आराधना करेंगे,
तेरी जन्म–जन्म भर हम वन्दना करेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

महिमा–महान तू है, गौरव–निधान तू है,
तू प्राण है हमारा, जननी समान तू है,
तेरे लिए जिएँगे, तेरे लिए मरेंगे,
तेरे लिए जन्मभर हम साधना करेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

जिसका मुकुट हिमालय, जग जगमगा रहा है,
सागर जिसे रत्न की, अंजलि चढ़ा रहा है,
वह देश है हमारा, ललकार कर कहेंगे,
इस देश के बिना हम जीवित नहीं रहेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

जो संस्कृति अभी तक, दुर्जेय–सी बनी है,
जिसका विशाल मन्दिर, आदर्श का धनी है,
उसकी विजय–ध्वजा ले हम विश्व में चलेंगे,
सुर–संस्कृति पवन बन हर कुंज में बहेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

शाश्वत–स्वतन्त्रता का, जो दीप जल रहा है,
आलोक का पथिक जो, अविराम चल रहा है,
विश्वास है कि पलभर रुकने उसे न देंगे,
उस ज्योति की शिखा को ज्योतित सदा रखेंगे।
हम अर्चना करेंगे।

अभ्यास

पाठ से

1. कविता में कवि किसकी वन्दना कर रहा है?
2. भारतभूमि को किसके समान बताया गया है?
3. कवि अपनी जन्मभूमि के लिए क्या–क्या करने को तैयार है?
4. भारत का मुकुट किसे कहा गया है?

आपकी समझ

1. अपनी जन्मभूमि के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है?
2. कवि ने भारतीय संस्कृति की कौन–सी विशेषता का उल्लेख किया है?
3. आलोक का पथिक निरन्तर चल रहा है, कवि ने ऐसा किसके लिए कहा है?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी इस कविता को कण्ठस्थ करें।

अध्यापक के लिए

1. कविता में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए कविता का सरलार्थ एवं भाव स्पष्ट करें।
2. कक्षा में इस कविता का भावपूर्ण वाचन करें तथा स्वतन्त्रता दिवस/गणतन्त्र दिवस के अवसर पर समूहगान के रूप में प्रस्तुत करने में विद्यार्थियों की सहायता करें।

राष्ट्रभक्ति ही समस्त राष्ट्रीय प्रगति तथा स्वातंत्र्य का मूल है। –लाला हरदयाल

2 योगासन एवं प्राणायाम

योगासन

▶ ikngLrklu

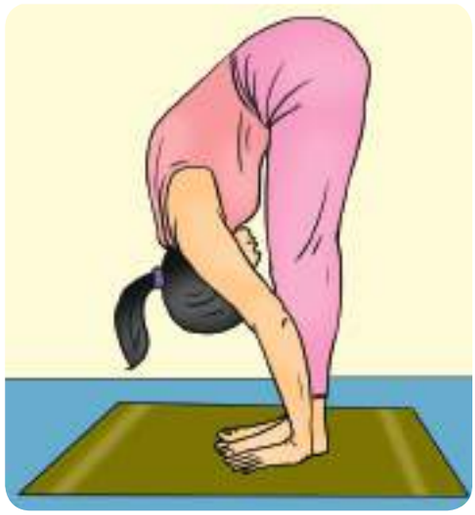

vFk – यहाँ पर 'पाद' का अर्थ पाँव तथा 'हस्त' का अर्थ हाथ है। इस आसन में हाथों का पैरों से सम्पर्क होता है इसलिए इसे पादहस्तासन कहा जाता है।

fLFkfr – सामान्य स्थिति की अवस्था में खड़े होकर इस आसन का अभ्यास करें।

fof/k –

1. दोनों पैरों को सटाकर खड़े हो जाएँ, श्वास लेते हुए दोनों हाथों को ऊपर ले जाएँ। हाथों को खुला रखें तथा अँगुलियों को सटाकर हथेलियाँ सामने की ओर रखें।
2. श्वास को बाहर छोड़ते हुए सामने की ओर धीरे–धीरे झुकें, दाईं हथेली को दाएँ पैर के साथ तथा बाईं हथेली को बाएँ पैर के साथ धरती पर टिकाने का प्रयास करें परन्तु घुटनों को सीधा रखें।
3. आँखों को शरीर की स्थिति के अनुसार रखें और श्वास खींचते हुए धीरे–धीरे सामान्य स्थिति में आ जाएँ।

ykHk –

1. माँसपेशियाँ मजबूत होती हैं।
2. मोटापा कम होता है।
3. शरीर चुस्त और फुर्तीला बनता है।
4. रक्त–संचार की क्रिया नियमित रहती है।

/kujklu

vFk – 'धनुर' शब्द धनुष के अर्थ में लिया गया है क्योंकि इस आसन में शरीर धनुष के समान हो जाता है। इसलिए इसे 'धनुरासन' कहते हैं।

fLFkfr – स्वच्छ कम्बल या दरी पर पेट के बल लेटकर अभ्यास करें।

fof/k –

1. पेट के बल लेटकर दोनों टखनों को हाथों से पकड़ें परन्तु नाभि को भूमि पर टिकाए रखें।
2. शरीर के ऊपरी और निचले भाग को ऊपर उठाएँ और कुहनियों को सीधा रहने दें। सिर को ऊपर उठाएँ रखें तथा नज़र सामने रहने दें।
3. इसके बाद बिना झटके के शरीर को धीरे–धीरे सामान्य स्थिति में लाएँ। शुरू में आधे मिनट तक यह आसन किया जा सकता है, फिर समय बढ़ाते हुए दो मिनट तक इसका अभ्यास करें।

ykHk –

1. इस आसन से बुद्धि कुशाग्र होती है।
2. स्नायुमण्डल मजबूत होता है।
3. गुर्दे तथा लीवर सुचारु रूप से कार्य करते हैं।
4. कब्ज और पेट के दूसरे रोग ठीक होते हैं।

m"Vklu

vFk – 'उष्ट्र' का अर्थ होता है–ऊँट। इस आसन को करते समय शरीर ऊँट जैसी स्थिति में आ जाता है इसलिए इसे 'उष्ट्रासन' कहते हैं।

fLFkfr – इस आसन को करने के लिए जमीन पर कम्बल या तौलिया रख लें। घुटनों के नीचे कोई मुलायम चीज़ रखकर अभ्यास करें।

fof/k –

1. घुटनों के सहारे खड़े होकर दाहिने हाथ से दाहिने पैर के टखने एवं बाएँ हाथ से बाएँ पैर के टखने के भाग को पकड़ लें। यदि टखना नहीं पकड़ सकते तो एड़ी पकड़ लें।
2. एड़ी या टखनों को पकड़े हुए ही जाँघों तथा कमर को सीधा करें।
3. सिर, गर्दन को यथासम्भव पीछे की ओर झुका दें। कमर के हिस्से को आगे की ओर थोड़ा–सा धकेलें।
4. सामान्य साँस लेते हुए इस अवस्था में 6 से 8 सेकेण्ड तक रहें तथा धीरे–धीरे सामान्य स्थिति में आ जाए।

ykHk –

1. दमा के रोगियों के लिए उष्ट्रासन बहुत फायदेमन्द है।
2. गर्दन, कन्धों या रीढ़ की कोई भी विकृति इससे धीरे–धीरे ठीक होने लगती है।
3. आँखों की रोशनी से सम्बन्धित दोष दूर होते हैं।
4. गले की बीमारी, टांसिल, आवाज का दोष तथा सिर के स्थायी दर्द में यह आसन बहुत लाभदायक है।

प्राणायाम

▶ mnxhFk ik.kk;ke

यह शान्ति एवं सौम्यता प्रदान करने वाला प्राणायाम है। इसके करने से अन्तर्मन में अत्यन्त शान्ति का अनुभव होता है। 'उद्गीथ' शब्द ओ३म् का ही वाचक है।

fof/k –

1. इस प्राणायाम को करने के लिए किसी भी ध्यानमुद्रा वाले आसन का चयन करें।

2. सबसे पहले 3 से 5 सेकेण्ड में श्वास को बिना रुकावट अन्दर भरें।

3. श्वास भरने के बाद 15 से 20 सेकेण्ड तक ओ३म् शब्द का उच्चारण करते हुए श्वास को बाहर छोड़ें।

4. इस तरह से लगभग तीन मिनट तक इस प्राणायाम का अभ्यास करें।

लाभ –

1. इस प्राणायाम के करने से स्थिरता, एकाग्रता व ध्यान लगाने में सहायता मिलती है।

2. इससे डर, भय और निराशा दूर होती है व आत्मविश्वास बढ़ता है।

3. इस प्राणायाम के निरन्तर करते रहने से बार–बार क्रोध आना, चिड़चिड़ापन, ईर्ष्या, हिंसा आदि की प्रवृत्ति समाप्त हो जाती है।

उज्जायी प्राणायाम

'उज्जायी' शब्द का अर्थ है – ऊपर की ओर उठना।

स्थिति – इस प्राणायाम को करने के लिए किसी कम्बल या दरी पर पद्मासन में बैठ जाएँ।

विधि –

1. आँखें बन्द रखें एवं ज्ञानमुद्रा बना लें।

2. अब नासिका द्वारा इस प्रकार साँस लें कि कण्ठ में घर्षण करते हुए ध्वनि उत्पन्न हो।

3. अब नासिका से वायु को धीरे–धीरे बाहर छोड़ दीजिए।

4. इस तरह 3 से 5 मिनट तक इस प्राणायाम का अभ्यास करें।

लाभ –

1. यह प्राणायाम सर्दी, खाँसी, जुकाम एवं गले के रोगों को दूर करने में अत्यन्त सहायक है।

2. गले को स्वस्थ एवं आवाज को मधुर बनाने के लिए इस प्राणायाम का नियमित अभ्यास करना चाहिए।
3. तुतलाकर बोलने वाले बच्चे यदि इस प्राणायाम का निरन्तर अभ्यास करते हैं तो उनका तोतलापन ठीक होता है।
4. इस प्राणायाम से थाइराइड में विशेष लाभ होता है।

अभ्यास

पाठ से

1. पादहस्तासन के लाभ बताइए।
2. दमे के रोगियों को कौन–सा आसन करना चाहिए?
3. उज्जायी प्राणायाम करने के क्या लाभ है?
4. धनुरासन करने की विधि बताइए।

आपकी समझ

1. आसन और प्राणायाम कैसे स्थान पर बैठकर करने चाहिएँ?
2. गुर्दों व लीवर को स्वस्थ रखने के लिए कौन–सा आसन करना चाहिए ?
3. कौन–सा प्राणायाम शान्ति और सौम्यता प्रदान करता है?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी प्रतिदिन नियमित रूप से सुबह जल्दी उठकर आसन और प्राणायाम करें।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को समझाएँ कि आसन और व्यायाम में क्या अन्तर है तथा इन्हें किस गति व तरीके से करना चाहिए।

चित्त की वृत्तियों को वश में रखना ही योग है। –पतंजलि

3 सूक्ति सुधा

1. धियो यो नः प्रचोदयात्। (यजुर्वेद)
परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर ले चलें।

Hkkoo– हे प्रभो! हम तेरी शरण में आए हैं। हमें ऐसी प्रेरणा दो जिससे हम सन्मार्ग की ओर चलें तथा सद्गुणी बने। हमारी बुद्धि सतकर्मों की ओर प्रवृत्त हो।

2. विश्वदानी सुमनसः स्यामः (ऋग्वेद)
हम सदा पुष्प के समान बनें।

Hkkoo– जिस प्रकार पुष्प अपनी मधुरिमा से परिपूर्ण सुगन्ध चारों ओर बिखेरता है उसी प्रकार हम भी दिव्य गुणों से इस संसार को महकाएँ तथा पुष्प के समान ही अपने लिए न जीकर दूसरों के लिए जीवन बलिदान करने वाले बने।

3. न स सखा यो न ददाति सख्ये (ऋग्वेद) (ऋग्वेद)
वह मित्र नहीं जो साथी की सहायता नहीं करता।

Hkkoo– मित्र विषम परिस्थितियों में भी अपनी मित्रता का परिचय देता है तथा अपने साथी का साथ नहीं छोड़ता। वास्तव में सच्चे मित्र की पहचान मुसीबत में ही होती है।

4. पंच क्षिप्रं विनश्यन्ति, स्तब्धो लुब्धश्च यो नरः।
अभिमानी च कामी च, गुरु–द्वेषी तथैव च।। (चाणक्य नीति)

Hkkoo– अर्थात् पाँच प्रकार के मनुष्य जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं – दुराग्रही, लोभी, अभिमानी, कामी और गुरु के द्वेषी। दुराग्रह करने वाला मनुष्य, लोभ के वशीभूत हुआ मनुष्य, अहंकार से भरा हुआ अर्थात् मद से चूर हुआ मनुष्य कभी प्रगति नहीं करता।

काम से पीड़ित मनुष्य और गुरु से द्वेष रखने वाले मनुष्य का मार्ग कभी प्रशस्त नहीं होता क्योंकि उसकी मति हर ली जाती है।

5. ईर्ष्या, लोभ, क्रोध एवं कठोर वचन–इन चारों से सदा बचते रहना ही वस्तुतः धर्म है। (तिरुवल्लुवर)

6. वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है, जो क्रोधावस्था में भी गलत बात मुख से नहीं निकालता है। (शेखसादी)

7. स्वास्थ्य सबसे महान उपहार है। सन्तोष सबसे बड़ा धन है। (महात्मा बुद्ध)

8. गुरु बिन पन्थ न पावै कोई।
केतिको ज्ञानी ध्यानी होई।। (नूर मोहम्मद)

9. जो धैर्यवान् और क्षमाशील है, वह निश्चय ही सबसे बड़ा साहसी है। (कुरान)

10. सत्य के लिए सब कुछ त्यागा जा सकता है, पर सत्य को किसी भी चीज़ के लिए नहीं छोड़ा जा सकता। (विवेकानन्द)

अभ्यास

पाठ से

1. प्रथम सूक्ति में ईश्वर से क्या प्रार्थना की गई है?
2. तिरुवल्लुवर के अनुसार सच्चा धर्म क्या है?
3. सच्चे मित्र की पहचान कब होती है?

आपकी समझ

1. पुष्प में ऐसी कौन–सी विशेषताएँ हैं, जो हमें धारण करनी चाहिएँ?
2. चाणक्य के अनुसार श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए किन–किन दुर्गुणों का परित्याग आवश्यक है?
3. सत्य के लिए सब कुछ क्यों छोड़ा जा सकता है?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी इसी प्रकार की अन्य सूक्तियों को एकत्रित करके प्रतिदिन एक–एक सूक्ति कक्षा में श्यामपट्ट पर लिखें तथा उनके भाव की चर्चा करें।

अध्यापक के लिए

सूक्तियों को संकलित कर प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करने में विद्यार्थियों की मदद करें।

धर्म यह है कि प्राणी को प्राणी के साथ सहानुभूति हो, एक दूसरे को अच्छी अवस्था में देखकर प्रसन्न हों।
–पण्डित मदनमोहन मालवीय

4 प्रेरक प्रसंग

भगिनी निवेदिता

स्वामी विवेकानन्दजी की ख्याति अमेरिका और यूरोप के प्रमुख देशों में आग के समान फैल चुकी थी। मिस मारग्रेट नोबल उनके प्रवचनों से अत्यन्त प्रभावित थीं और उनके प्रति अपार श्रद्धा रखती थीं। वे एक विद्यालय का संचालन भी करती थीं। उनकी इच्छा थी कि स्वामीजी किसी दिन उनके विद्यालय में पधारें।

एक दिन स्वामीजी उनके विद्यालय में गए। विद्यालय में बड़े ही श्रद्धाभाव से उनका स्वागत किया गया। उसके बाद स्वामीजी ने प्रत्येक कक्षा का निरीक्षण किया तथा बच्चों से बातचीत की। स्वामीजी ने प्रत्येक कक्षा के निरीक्षण के दौरान पाया कि कक्षाएँ अच्छी प्रकार सजाई गई थीं। बच्चों के बैठने के लिए बढ़िया डेस्क थे, जिनमें पुस्तकें रखने का उचित स्थान बना था। कक्षा में बढ़िया श्यामपट्ट लगा था। सुन्दर चित्रों से दीवारों को सजाया गया था।

कक्षाएँ देखने के बाद स्वामीजी प्रधानाचार्य के कक्ष में पहुँचे। उस कक्ष में भी कुर्सियाँ, मेज़ तथा अलमारी ढंग से सजा–सँवार कर रखी गई थीं। अल्पाहार की व्यवस्था थी। ये सब देखकर स्वामीजी की आँखों में आँसू आ गए। नोबल ने पूछा, ''स्वामीजी क्या हुआ? स्वागत में किसी प्रकार की कमी रह गई क्या? आपकी आँखों में आँसू देखकर मैं बहुत चिन्तित हूँ।'' इस पर बड़ी भावुकता से स्वामीजी ने कहा, ''नोबल, मैं तुम्हारा विद्यालय देखकर अत्यन्त प्रसन्न हूँ। यहाँ की साज–सज्जा बहुत आकर्षक है। विद्यार्थियों के बैठने का प्रबन्ध भी सुन्दर है।

ये सब देखकर मुझे अपने देश की याद आ गई थी। हमारे यहाँ शिक्षक के लिए सुविधाएँ नहीं, कठिनाइयाँ ही कठिनाइयाँ हैं। विद्यालय इतने दूर–दूर हैं कि छात्रों को मीलों चलकर

जाना पड़ता है। लड़कियों को तो इतनी दूर पढ़ाने के लिए भेजने की बात कोई सोच भी नहीं सकता। जो विद्यालय हैं, उनमें भवन के नाम पर दो–तीन कमरे हैं। कहीं–कहीं तो शिक्षक पेड़ के नीचे ही पढ़ाते हैं। डेस्क की जगह बालक टाट–पट्टी या बोरी पर बैठते हैं। सब प्रकार की सहायक सामग्री की जगह शिक्षक ही है। शिक्षक भी जहाँ दस पैसे अपेक्षित हैं तो चार–पाँच पैसों में ही गुजारा चला रहा है। मैं अपने देश के उन बच्चों की परिस्थितियों के बारे में सोचकर भावुक हो गया था। मैं सोच रहा था कि क्या कभी मेरे भारत में भी इस प्रकार के सुविधा–सम्पन्न विद्यालय चलेंगे?''

स्वामीजी के देशप्रेम की इस अभिव्यक्ति से कुमारी मारग्रेट नोबल बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने एक दृढ़–संकल्प लिया, 'स्वामीजी, मैं आपकी शिष्या बनकर आपके साथ चलूँगी। मैं भारत के बच्चों की, वहाँ की जनता की सेवा करना चाहती हूँ। क्या आप मुझे अनुमति देंगे? 'स्वामीजी ने उन्हें न केवल अपनी शिष्या बनाया, बल्कि उन्हें बहन बनाकर उनका नाम रखा–'भगिनी निवेदिता'।

अभ्यास

पाठ से

1. मारग्रेट की क्या इच्छा थी?
2. मारग्रेट के विद्यालय की व्यवस्था कैसी थी?

आपकी समझ

1. मिस मारग्रेट के विद्यालय को देखकर स्वामीजी की आँखें नम क्यों हो गईं?
2. मारग्रेट स्वामीजी की शिष्या क्यों बनना चाहती थीं?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी पुस्तकालय में जाकर स्वामी विवेकानन्द की पुस्तकें पढ़ें।

अध्यापक के लिए

अध्यापक विद्यार्थियों से स्वामी विवेकानन्द के जीवन से जुड़ी अन्य प्रेरक घटनाओं की चर्चा करें।

सिर्फ अच्छे कामों में एक दूसरे की मदद करो। –कुरान

तीन छन्नी परीक्षण

प्राचीन यूनान में सुकरात नामक एक विख्यात दार्शनिक व ज्ञानी व्यक्ति रहा करते थे।एक दिन उनका एक परिचित उनसे मिलने आया और बोला, 'क्या तुम जानते हो कि मैंने तुम्हारे मित्र के बारे में क्या सुना है?'

सुकरात ने उसे टोकते हुए कहा, 'एक मिनट रुको। इससे पहले कि तुम मुझे मेरे मित्र के बारे में कुछ बताओ, मैं तीन छन्नी परीक्षण करना चाहता हूँ।'

'तीन छन्नी परीक्षण?'' व्यक्ति ने कहा।

सुकरात ने कहा, 'जी हाँ, मैं इसे तीन छन्नी परीक्षण इसलिए कहता हूँ, क्योंकि जो भी बात आप मुझसे कहेंगे, उसे तीन छन्नी से गुजारने के बाद ही कहेंगे।'

पहली छन्नी है–'सत्य'। जो बात आप मुझसे कहने जा रहे हैं, क्या विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि वह पूर्ण सत्य है?

व्यक्ति ने उत्तर दिया, 'जी नहीं, दरअसल वह बात मैंने अभी–अभी सुनी है, और.....'

सुकरात बोले, 'तो तुम्हें इस बारे में ठीक से कुछ नहीं पता है।'

'आओ, अब दूसरी छन्नी लगाकर देखते हैं। दूसरी छन्नी है –'भलाई'। क्या तुम मेरे मित्र के बारे में कोई अच्छी बात जानते हो? 'जी नहीं, बल्कि मैं तो .....'

'तो तुम मुझे कोई बुरी बात बताने जा रहे थे, लेकिन तुम्हें यह भी मालूम है कि यह बात सत्य है या नहीं,' सुकरात बोले। 'तुम एक और परीक्षण से गुजर सकते हो। तीसरी छन्नी है–'उपयोगिता'। क्या वह बात जो तुम मुझे बताने जा रहे हो, मेरे लिए उपयोगी है?'

वह व्यक्ति बोला– 'शायद नहीं।'

यह सुनकर सुकरात ने कहा, 'जो बात तुम मुझे बताने जा रहे हो, न तो वह सत्य है और न ही अच्छी व उपयोगी। तो फिर ऐसी बात कहने का क्या फायदा।'

अभ्यास

पाठ से

1. तीन छन्नी परीक्षण क्या था ?
2. सुकरात कौन था और कहाँ का रहने वाला था?
3. अन्त में सुकरात ने उस व्यक्ति को क्या कहा ?

आपकी समझ

1. तीन छन्नी परीक्षण करने के पीछे सुकरात का क्या मकसद था ?
2. ''सुनी सुनाई बात पर भरोसा न करना'', इस कहावत के पीछे क्या भाव है ?

कुछ करने के लिए

किसी बात की सत्यता व उपयोगिता को जाँचने के लिए तीन छन्नी परीक्षण का प्रयोग करके देखिए।

अध्यापक के लिए

अध्यापक विद्यार्थियों को किसी अन्य उदाहरण द्वारा 'सुनी सुनाई बात' के दुष्परिणामों से अवगत कराएँ।

सत्य का मार्ग सुख से गमन करने योग्य और सरल है। –ऋग्वेद

5 नीति के दोहे

कबिरा खड़ा बजार में, माँगे सबकी खैर।
ना काहू से दोस्ती, ना काहू से वैर।।

HkkokFk : मित्रता एवं शत्रुता जैसे विभिन्न भावों से मुक्त होकर कबीरजी सभी के कल्याण की मंगलकामना करते हैं।

हिन्दू कहे मोहि राम पियारा, तुर्क कहे रहमाना।
आपस में दोऊ लरी–लरी मुए, मरम न कोऊ जाना।।

HkkokFk : हिन्दू राम के भक्त हैं, तुर्कों को रहमान प्यारा है। इस बात पर दोनों लड़ते हैं। वास्तव में ये धर्म का सच नहीं जान पाए हैं। मज़हब कभी आपस में वैर करना नहीं सिखाता।

कहत सुनत सब दिन गए, उरझि न सुरझया मन।
कही कबीर चेत्या नहीं, अजहुँ सो पहला दिन।।

HkkokFk : कहने, सुनने में ही सब दिन निकल गए। परन्तु यह मन अपनी उलझनों को सुलझा नहीं सका। इतने दिन बीतने पर भी मन की दशा पहले दिन जैसी ही है। इसकी चेतना जाग्रत नहीं हुई।

कबीर लहरी समन्द की, मोती बिखरे आई।
बगुला भेद न जानई, हंसा चुनि–चुनि खाई।।

HkkokFk : कबीर कहते हैं कि समुद्र की लहरों ने तट पर मोती बिखेर दिए हैं। बगुला उनका महत्त्व नहीं समझ पा रहा है जबकि हंस उन्हें चुन–चुन कर खा रहा है। इसी प्रकार पारखी व्यक्ति ही जीवन में मूल्यवान वस्तुओं की परख कर सकता है।

जब गुण को गाहक मिले, तब गुण लाख बिकाय।
जब गुण को गाहक नहीं, कौड़ी बदले जाय।।

HkkokFk : कबीर कहते हैं कि गुणों के कद्रदान मिलने पर उनका मोल लाखों में होता है। गुणों का ग्राहक न मिलने पर वे कौड़ियों के भाव जाते हैं।

कबीर कहा गरबियो, काल गहे कर केस।
ना जाने कहाँ मारिसी, के घर के परदेस।।

HkkokFk : कबीर कहते हैं कि मनुष्य के केश, काल के हाथों में हैं। पता नहीं घर में अथवा परदेश में कहाँ मनुष्य का प्राणान्त हो जाए। अतः उसे घमण्ड नहीं करना चाहिए।

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलेंहैं लोग सब, बाँटि न लेंहैं कोय।।

HkkokFk : रहीमजी कहते हैं कि अपने हृदय की पीड़ा को अपने अन्तर में ही छिपा कर रखना चाहिए। उन्हें सुनकर लोग प्रसन्न ही होते हैं। उन्हें बाँट कर कम करने वाला कोई नहीं होता।

रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुःख प्रगट करेइ।
जाहि निकारौ गेह ते, कस न भेद कहि देइ।

HkkokFk : रहीमजी कहते हैं कि आँखों से बाहर आकर आँसू हृदय का दुख प्रकट कर देते हैं। सत्य है, जिसे घर से बाहर निकाला जाता है, वह घर का भेद दूसरों से कह देता है।

पावस देखि रहीम मन, कोइल साधै मौन।
अब दादुर वक्ता भए, हमको पूछै कौन।।

HkkokFk : वर्षाऋतु का आगमन होने पर कोयल तथा रहीमजी अपने मन से मौन हो गए हैं। इस ऋतु में तो मेंढक ही बोलते हैं। अभिप्राय है कि कुछ अवसरों पर गुणवान को चुप रह जाना पड़ता है और गुणहीन वाचाल व्यक्तियों का ही बोलबाला हो जाता है।

रहिमन विपदा हू भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जान परत सब कोय।।

HkkokFkZ : रहीमजी कहते हैं कि थोड़े समय के लिए आई हुई विपत्ति भी भला ही करती है। इससे हमें यह ज्ञात हो जाता है कि हमारा हित चाहने वाले कौन हैं।

अभ्यास

पाठ से

1. बाज़ार में खड़े होकर कबीर क्या माँगते हैं?
2. हिन्दू तथा तुर्क आपस में किस बात पर झगड़ा करते हैं?
3. रहीम के अनुसार अपने मन की व्यथा को प्रकट करने से क्या हानि है?
4. वर्षाऋतु में कोयल मौन क्यों हो जाती है?

आपकी समझ

1. कबीर का धर्म के मरम से क्या अभिप्राय है?
2. 'अजहुँ सो पहला दिन' से कवि का क्या आशय है?
3. चतुर्थ दोहे में हंस तथा बगुला किसके प्रतीक है?
4. घर से निकाले गए व्यक्ति की पीड़ा को रहीम ने किस प्रकार व्यक्त किया है?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी कबीर एवं रहीम के दोहों को कण्ठस्थ कर बालसभा में उनका सस्वर वाचन करें।

अध्यापक के लिए

अध्यापक दोहों का कक्षा में लयबद्ध गायन करवाएँ।

गुण सब स्थानों पर अपना आदर करा लेता है। —कालिदास

6 दया धर्म का मूल है

बहुत समय पहले की बात है। एक घने जंगल में शेर और शेरनी का जोड़ा रहता था। कुछ दिनों बाद शेरनी के दो बच्चे हुए। सुन्दर बच्चों को पाकर वे दोनों बहुत खुश हुए।

शेर ने शेरनी से कहा, 'जब तक बच्चे बड़े नहीं हो जाते तब तक तुम घर में ही रहो। मैं बाहर जाकर शिकार करूँगा।'

शेर नियमित रूप से शिकार करने जाता और शेरनी के लिए भरपूर भोजन लेकर लौटता। एक दिन शेर को कोई शिकार नहीं मिला। शाम को जब वह खाली हाथ लौट रहा था तो रास्ते में एक सियार का बच्चा दिखाई पड़ा। वह उसी को उठाकर शेरनी के पास ले आया।

घर पहुँच कर शेर ने कहा, 'आज मुझे इस सियार के बच्चे के अलावा और कुछ नहीं मिला। तुम इसे ही मार कर खा लो। वह अभी छोटा बच्चा है, इसलिए इसे मारना मुझे अच्छा नहीं लगा।'

इस पर शेरनी बोली, 'बच्चा समझ कर जब तुम इसे मारना नहीं चाहते, तब मैं इसे कैसे मार सकती हूँ? मैं तो इसी की तरह के दो बच्चों की माँ हूँ। आज से यह मेरा तीसरा बेटा होगा। मैं इस पर कोई आँच नहीं आने दूँगी।'

शेरनी सियार के बच्चे की भी देखभाल करने लगी। उसे भी वह अपने बच्चों के साथ–साथ पालने लगी। इस प्रकार तीनों बच्चे साथ–साथ पलकर बड़े हुए।

तीनों बच्चे हमेशा साथ रहते। साथ ही खेलते और साथ ही इधर–उधर भागा–दौड़ी करते। कभी–कभी वे घर से दूर निकल जाते और यदि किसी जानवर पर उनकी नज़र पड़ जाती तो उसका पीछा करने लगते।

एक दिन कहीं से घूमता–घामता एक हाथी उस जंगल में आ गया। शेर के बच्चों ने जैसे ही हाथी को देखा, वे उसका पीछा करने लगे। वे दोनों उस हाथी को मार डालना चाहते थे लेकिन सियार का बच्चा हाथी को देखकर घबरा गया।

उसने चिल्लाकर कहा, 'यह तो हाथी है! उसके नज़दीक न जाना। यह तुम्हें मार डालेगा।' इतना कहकर सियार का बच्चा भागने लगा।

शेर के बच्चों ने जब अपने भाई को भागते देखा तो वे भी हिम्मत हार गए और हाथी का पीछा छोड़कर घर भाग आए।

घर पहुँच कर उन्होंने यह घटना अपनी माँ को सुनाई। उन्होंने बताया कि जब वे हाथी का पीछा करने लगे तो उनका भाई घबरा गया और उनका साथ देने की बजाय वहाँ से भाग गया।

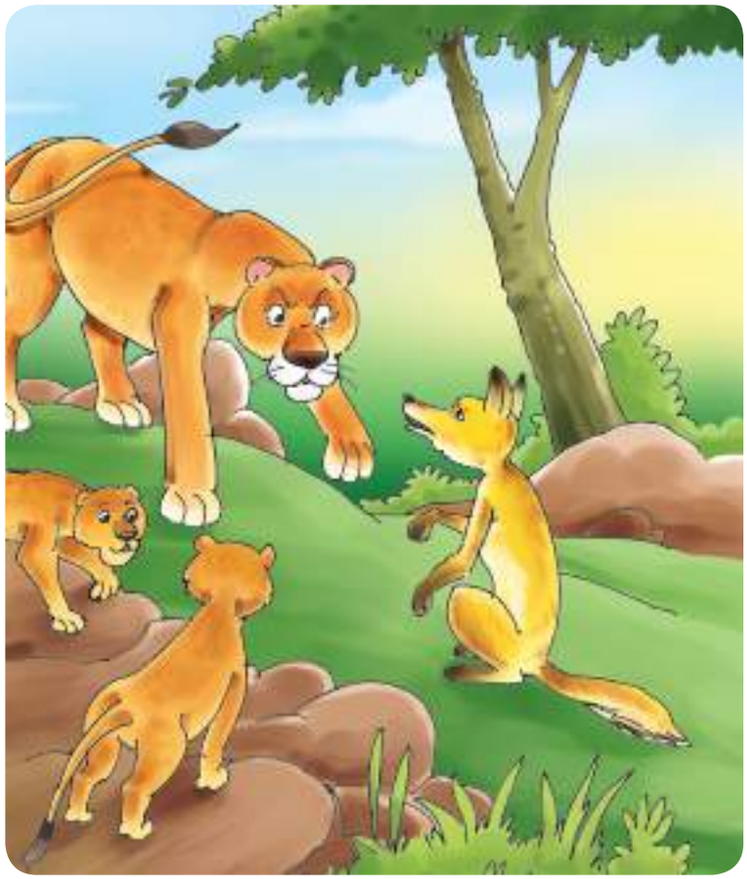

सियार के बच्चे ने भी ये बातें सुनीं। उसे बहुत बुरा लगा। उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाकर कहा, 'मैं डरपोक नहीं हूँ। अगर तुम बहादुर हो तो मैं भी तुमसे कम नहीं हूँ। तुमने मुझे समझा क्या है? ज़रा बाहर निकलो और लड़कर देखो।'

शेरनी ने सियार के बच्चे को अलग बुलाकर कहा, 'तुम्हें अपने भाइयों से ऐसी बातें नहीं कहनी चाहिए।'

शेरनी की बात सुनकर उसका गुस्सा और बढ़ गया। 'ये क्यों मेरी हँसी उड़ाते हैं, मैं क्या इनसे कम बहादुर हूँ। अभी इनकी सारी हेकड़ी भुला दूँगा। मैं दोनों को जान से मार डालूँगा।'

सियार के बच्चे की बात सुनकर शेरनी मुस्कराने लगी और बोली, 'तुम्हारे क्या कहने! तुम सुन्दर हो, बहादुर हो और चतुर भी हो। पर पता है तुम्हारे खानदान में हाथी नहीं मारे जाते।'

सियार का बच्चा शेरनी की बात का अर्थ न समझा। उसने पूछा, 'ऐसा कहने से तुम्हारा क्या मतलब?'

शेरनी ने कहा, 'देखो बेटा, तुम सियार के लड़के हो। मुझे तुम पर दया आ गई थी। इसलिए मैंने तुम्हें अपने बच्चों की तरह पाला। मेरे बच्चों को पता भी नहीं है कि तुम सियार हो। हाँ, अब तुम यहाँ से चुपचाप भाग जाओ और सियारों के बीच जाकर रहो। यदि तुम नहीं गए तो मेरे बच्चे तुम्हें मार कर खा जाएँगे।'

यह सुनते ही डर के मारे सियार के बच्चे के रोंगटे खड़े हो गए। उसने आव देखा न ताव और वह फौरन वहाँ से जान बचाकर भाग गया।

¼ipr U= l½

अभ्यास

पाठ से

1. शेर नियमित रूप से कहाँ जाता था?
2. शाम को शिकार से लौटते वक्त शेर किसे उठाकर लाया?
3. शेर ने सियार के बच्चे को क्यों नहीं मारा?
4. हाथी को देखकर शेर के बच्चों ने क्या सोचा?
5. शेरनी ने सियार के बच्चे को क्या समझाया?

आपकी समझ

1. शेरनी सियार के बच्चे को न मारकर उसकी देखभाल क्यों करने लगी?
2. सियार के बच्चे को अन्त में अपनी जान बचाकर क्यों भागना पड़ा ?
3. शेरनी ने माँ के समान सियार के बच्चे का पालन–पोषण किया और बड़ा होने पर वहाँ से चले जाने को कहा, सोचो शेरनी ने ऐसा निर्णय क्यों लिया होगा?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी अपने आस–पास यदि किसी भूखे व असहाय पशु को देखें तो उसकी यथासम्भव सहायता करें।

अध्यापक के लिए

1. कक्षा में अध्यापक विद्यार्थियों को ऐसी घटना सुनाने को कहें जब एक जीव ने दूसरे जीव की मदद की हो।
2. हम जीवों की सहायता किस प्रकार कर सकते हैं? इस विषय पर कक्षा में चर्चा करें।

दया करने में, यह अपना है, यह पराया है– भेदभाव नहीं होना चाहिए।

–हर्ष

7 मनुष्य के आन्तरिक शत्रु

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहता है लेकिन भौतिकता के वशीभूत होने पर उसके मन में काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार उत्पन्न हो जाते हैं। इन पर नियन्त्रण करके ही मनुष्य सबके प्रति समभाव रख सकता है। जब मनुष्य कामनाओं के अधीन हो जाता है तब उनके पूरा न होने पर वह आवेश में आकर कोई दोष कर बैठता है। कामनाओं के कारण ही उसके भीतर काम, क्रोध, लोभ व मोह की उत्पत्ति होती है और इन्हीं के वशीभूत होकर मनुष्य गलत आचरण करता है। अतः इन्हीं विकारों को मनुष्य के आन्तरिक शत्रु बताया गया है।

(1)

एक ब्राह्मण था। उसे किसी कार्यवश बाहर जाना था। पत्नी पहले से ही घर से बाहर गई हुई थी और शिशु घर पर था। उसने सोचा शिशु को किसके भरोसे छोड़कर जाए। तभी उसके मस्तिष्क में एक उपाय आया– 'क्यों न पुत्र के समान पाले गए नेवले को पुत्र की रक्षा के लिए नियुक्त कर कार्य के लिए चला जाऊँ।' ऐसा निश्चय करके ब्राह्मण चला गया। ब्राह्मण के जाने के बाद नेवले की दृष्टि काले साँप पर पड़ी जो शिशु की तरफ आगे बढ़ रहा था। उसने शिशु की रक्षा के लिए साँप को मारकर टुकड़े–टुकड़े कर दिया। नेवले का मुख साँप के खून से लथपथ हो गया। इसी दौरान ब्राह्मण घर आ गया। नेवले के मुख को खून से लथपथ देखकर ब्राह्मण ने सोचा– नेवले ने शिशु को मारकर खा लिया है। उसने क्रोधित होकर पुत्र–मोह में नेवले को मार दिया।

गीता में भी कहा गया है–

Øk/kkn' Hkofr lEekg% lEekgRLe'frfoHke%A

Le'frHk'kkn' cf)uk'kk cf)uk'kkRi.k';frAA

क्रोध से सम्मोह होता है, सम्मोह से स्मृतिविभ्रम, स्मृतिभ्रंश से बुद्धिनाश और बुद्धिनाश होने पर मनुष्य ही नष्ट हो जाता है। जिस प्रकार ब्राह्मण ने क्रोधवश और पुत्रमोहवश बिना कुछ सोचे–विचारे वफादार नेवले को मार दिया।

जब ब्राह्मण ने अन्दर जाकर देखा, तो शिशु स्वस्थ खेल रहा था और उसके पास एक काला बड़ा साँप मरा पड़ा था। यह देखकर ब्राह्मण को बहुत पश्चाताप हुआ।

ukfLr Øk/k lek ogfu] ukfLr ekg lek fjiq%A

क्रोध के समान कोई अग्नि नहीं है और मोह के समान शत्रु नहीं है, जैसे ब्राह्मण ने क्रोध के वशीभूत होकर और मोह रूपी शत्रु से ग्रस्त होकर नेवले को मार दिया।

(2)

सुबुद्धि और दुर्बुद्धि घनिष्ठ मित्र थे। दोनों मित्र खुदाई का काम करते थे। एक दिन खुदाई करते समय उन्हें खजाने से भरा हुआ घड़ा मिला। सुबुद्धि अपने मित्र दुर्बुद्धि से बोला, मित्र! इसे अपने पास रख लो, बाद में आपस में बराबर–बराबर बाँट लेंगे। दुर्बुद्धि के मन में लोभ आ गया। उसने लोभवश सोचा–'यदि मैं सुबुद्धि को मार दूँ तो सारा खजाना मेरा हो जाएगा।' उसने सुबुद्धि को मारने के लिए एक जहरीले साँप को उसके कमरे में छोड़ दिया। परन्तु सुबुद्धि पहले से ही किसी कारणवश बाहर गया हुआ था। कुछ समय बाद दुर्बुद्धि ने यह देखने के लिए कमरे में प्रवेश किया कि मित्र की मृत्यु हुई है या नहीं। जैसे ही उसने प्रवेश किया, वैसे ही दरवाज़े के पीछे फन फैलाए बैठे साँप ने उसे काट लिया और उसकी मृत्यु हो गई।

सच ही कहा है–

ukfLr dke lek 0;kf/k%] ukfLr ykHk lek ik'k%A

कामनाओं के समान रोग नहीं है और लालच के समान बन्धन नहीं है। जैसे दुर्बुद्धि ने कामनाओं के वशीभूत होकर और लालच में आकर मित्र को मारने का प्रयास किया किन्तु अपने ही प्राण गँवा दिए।

दोनों प्रसंगों से हमें यही शिक्षा मिलती है–'काम, क्रोध, मोह तथा लोभ ये सभी मनुष्य के आन्तरिक शत्रु हैं और उसकी उन्नति में बाधक हैं।'

जैसे–

f=fo/k ujdL;n }kj uk'kuekReu%A
dke% Øk/kLrFkk YkkHkLrLeknrR=; R; trAA

काम, क्रोध, लोभ तथा मोह ये सभी दोष सदा नाश की ओर ले जाते हैं। हमें अपने अन्दर इन दोषों को उत्पन्न ही नहीं होने देना चाहिए तथा जीवन में संयम, सन्तोष व सदाचार जैसे गुणों को अपनाना चाहिए।

अभ्यास

पाठ से

1. मनुष्य के आन्तरिक शत्रु कौन–से हैं?
2. ब्राह्मण शिशु की रक्षा के लिए किसको नियुक्त करके गया?
3. खुदाई करते समय दोनों मित्रों को क्या मिला?
4. दुर्बुद्धि के मन में क्या लोभ उत्पन्न हुआ और उसका क्या परिणाम निकला?

आपकी समझ

1. ब्राह्मण ने नेवले को क्यों मारा?
2. दुर्बुद्धि ने अपने मित्र को मारने का क्या उपाय किया तथा क्या परिणाम हुआ?
3. ब्राह्मण और नेवले की घटना से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी इसी प्रकार की घटनाएँ, प्रसंग कहानियाँ अपने घर पर माता–पिता व बुजुर्गों से सुनकर कक्षा में सुनाएँ।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को पाठ में आए हुए श्लोकों का शुद्ध उच्चारण के साथ वाचन करवाएँ।

लोभी मनुष्य किसी कार्य के दोषों को नहीं समझता, वह लोभ और मोह से प्रवृत्त हो जाता है।
–वेद व्यास

गीता–पाठ (पठन और मनन के लिए)

गीता जीवन जागृति का पावन मन्त्र है। इस मन्त्र ने कितने ही कर्तव्यविमुख अर्जुन मनों को कर्म क्षेत्र में विजय दिलाई है। गीता में जीवन की बहुविध धाराओं का एकान्त समागम है। यह जीवन स्फूर्ति का उद्‌गम स्रोत है। प्रस्तुत पाठ में गीता के सातवें, आठवें और नौवें अध्याय को सार रूप में दिया जा रहा है।

सप्तम अध्याय

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के सातवें अध्याय का नाम ज्ञानविज्ञान योग है। इस अध्याय में 30 श्लोक हैं। इस अध्याय में विज्ञान सहित ज्ञान का वर्णन है। इसमें भगवान् की व्यापकता का प्रतिपादन एवं भगवद् भक्तों की प्रशंसा की गई है। आसुरी स्वभाव वाले व्यक्तियों की निन्दा की गई है। इस अध्याय में बताया गया है कि संसार के सकल पदार्थों में कारण रूप से भगवान् विद्यमान है। भगवत् भक्तों के भेद और ज्ञानी पुरुष को भगवान् की आत्मा माना है तथा अन्य देवताओं की उपासना के फल का निरूपण करते हुए भगवान् के स्वभाव, प्रभाव जानने वालों की प्रशंसा और प्रभाव न जानने वालों की निन्दा की गई है। संसार में व्याप्त मोह ममतारूपी माया को पार करने के उपाय का वर्णन करते हुए कहा है कि–

n\oh á"kk x|.ke;h ee ek;k n|jR;;kA
ekeo ; i|i |Ur ek;kerk rjfUr rAA

यह त्रिगुणदैवी घोर माया अगम और अपार है।
आता शरण मेरी वही जाता सहज में पार है।।

मेरी यह अद्‌भुत त्रिगुणमयी माया बड़ी दुस्तर है, जो लोग मुझको निरन्तर भजते हैं, वे इस माया के पार हो जाते हैं।

अष्टम अध्याय

श्रीमद्‌भगवद्‌गीता के आठवें अध्याय का नाम अक्षरब्रह्म योग है। इस अध्याय में 28 श्लोक हैं। इस अध्याय में ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन है। इसमें अध्यात्म और कर्म आदि के विषय में

अर्जुन के सात प्रश्नों का उत्तर देकर भक्तियोग एवं जीवात्मा के प्रयाण के शुक्ल तथा कृष्ण मार्गों का विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया है। ब्रह्मवेताओं की ऊर्ध्वगति के सम्बन्ध में विचार करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं कि –

vfXuT;ksfrjg% ’kqDy% “k.ekl k mÙkjk;.keA
r= iz;krk xPNfUr cz ã cz ãfonks tuk%AA

दिन, अग्नि, ज्वाला, शुक्लपक्ष, षट्, उत्तरायण मास में।
तन त्याग जाते ब्रह्मवादी, ब्रह्म ही के पास में।।

जिस मार्ग में ज्योतिर्मय अग्नि, दिन, शुक्लपक्ष और उत्तरायण के छह महीने हैं, उस मार्ग में मर कर गए ब्रह्मवेत्ता योगीजन ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

नवम अध्याय

श्रीमद्भगवद्गीता के नवम अध्याय का नाम राजविद्या राजगुह्य योग है। इस अध्याय में 34 श्लोक हैं। इस अध्याय में ज्ञान के स्वरूप का वर्णन, जगत की सृष्टि का प्रतिपादन किया गया है। भगवान् का तिरस्कार करने वाले आसुरी प्रकृति के व्यक्तियों की निन्दा, सकाम और निष्काम भक्ति के फलों का निरूपण किया गया है। दैवी प्रकृति वाले व्यक्तियों के द्वारा भगवत् भजन के प्रकार का वर्णन किया है। भगवान् का सर्वात्मरूप से स्थिति का उसके प्रभाव का वर्णन किया है। अनन्यभाव से भक्ति करने वाले अधम पुरुष को भी भगवान् की प्राप्ति का वर्णन करते हुए श्री कृष्ण कहते हैं कि–

vfi psRlqnqjkpkjks Hktrs ekeuU;HkkdA
lk/kqjso l eUrO;% lE;XO;ofLkrks fg l%AA

यदि दुष्ट भी भजता अनन्य सुभक्ति को मन में लिए।
है ठीक निश्चयवान् उसको साधु कहना चाहिए।।

यदि कोई अतिशय दुराचारी भी अनन्यभाव से मुझ को निरन्तर भजता है, तो वह भी साधु ही मानने योग्य है क्योंकि वह यथार्थ निश्चय वाला है, अर्थात् उसने भलीभाँति निश्चय कर लिया है कि परमात्मा के भजन के समान अन्य कुछ भी नहीं है।

8 रानी दुर्गावती

आज जिसे मध्यप्रदेश कहा जाता है, उस राज्य में जबलपुर शहर भी है। इसी जबलपुर के पास गढ़ामण्डला का एक किला है। सोलहवीं सदी में इस किले के पास–पड़ोस में गोंड लोगों का राज्य था। राज्य के इस भूभाग को गोंडवाना कहा जाता था। इसी गोंडवाना राज्य के राजा दलपतशाह की वीर पत्नी रानी दुर्गावती ने अपने असाधारण पराक्रम से सम्राट अकबर की विशाल सेना के छक्के छुड़ा कर भारत की महान नारियों में अपना नाम सदा के लिए अमर कर दिया।

जब भी फुरसत मिलती, दुर्गावती कभी घोड़े की सवारी करती, तो कभी तीर–कमान पर हाथ आजमाती, कभी तलवार या भाला चला कर देखती, तो कभी बन्दूक व तमंचे पर भी अँगुली रख कर देखती थी। एक किस्सा है– एक दिन उसने अपने पिता कीर्तिसिंह के हाथी पर अम्बारी कसवाई और महावत से कहने लगी कि वह खुद हाथी को चलाएगी। महावत कीर्तिसिंह का पुराना नौकर था। उसने रानी बेटी से कहा कि वह उसे भी अपने साथ हाथी पर बैठने दे। किन्तु दुर्गावती ने यह बात नहीं मानी। वह जिद करने लगी। आखिर महावत स्वयं घोड़े पर चढ़ा और दुर्गावती को हाथी पर बिठाया। उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि एक बार भी अंकुश का प्रयोग किए बिना ही दुर्गावती हाथी को जहाँ मर्जी हुई, घुमा कर सकुशल वापस ले आई।

दुर्गावती के रूप तथा बुद्धिमानी की, कला तथा हथियार दोनों में निपुण होने की बात गोंडवाना और पूरे बुन्देलखण्ड में फैल गई। बड़े–बड़े राजा उसे अपनी रानी बनाने के सपने देखने लगे। गढ़ामण्डला का तरुण राजा दलपतशाह भी उनमें एक था। उसने तो मन ही मन निश्चय कर लिया था कि विवाह करेगा तो दुर्गावती से ही।

यह बात दुर्गावती के कानों तक पहुँच गई थी। उसने भी मन ही मन यह निश्चय कर लिया था कि वह उन्हीं के साथ शादी करेगी। घर में शादी की तैयारियाँ जारी

देखकर दुर्गावती ने दलपतशाह को एक पत्र लिखकर अपना निश्चय बता दिया और कहा कि राजपूत परम्परा के अनुसार युद्ध करके आप मुझे पाने के अधिकारी बनें।

वैसे तो दलपतशाह युद्ध की तैयारी में लग ही गए थे, दुर्गावती का पत्र पाकर उन्होंने और भी उत्साहित होकर तैयारी पूरी कर ली। अन्त में दलपतशाह के रणकौशल तथा युद्धनीति के कारण कीर्तिसिंह की सेना हार गई, दलपतशाह विजयी हुए। दुर्गावती दलपतशाह के साथ गढ़ामण्डला चली गई।

विवाह के कुछ समय पश्चात् दलपतशाह की अचानक किसी बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। रानी दुर्गावती पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा। किन्तु वह एक महान क्षत्राणी थी, विपत्तियों से हारने वाली नहीं थीं। उन्होंने तय किया कि वे महाराजा दलपतशाह के अधूरे कार्य को पूरा करेंगी तथा अपनी प्रजा को सभी तरह से सुखी करने का प्रयास करेंगी।

दुर्गावती ने पति के देहान्त के बाद गोंडवाना राज्य को सुव्यवस्थित किया, मांडो के राजा बाजबहादुर को बार–बार हराया और पड़ोस के अन्य शासकों से भी लोहा लेती रहीं।

उन्होंने अपने राज्य में दूर–दूर तक लोगों के पीने के लिए पानी के तालाब बनवाए, सरायें बनवाईं। राज्य में अच्छी सड़कें बनाने का काम किया। इन सब बातों का परिणाम यह हुआ कि गढ़ामण्डला की ओर उठी हुई तलवारें बढ़ने लगीं। अकबर पर यह धुन सवार थी कि किसी प्रकार गढ़ामण्डला पर कब्जा कर लिया जाए। रानी दुर्गावती के सुन्दर रूप का वर्णन उसने सुना था। उसके अच्छे राजकाज की कीर्ति भी उसके कानों तक पहुँची थी।

रानी दुर्गावती इससे बड़ी सतर्क हो गई थीं। अकबर से लोहा लेने को जहाँ तक बने, वह टालना चाहती थीं। इधर अकबर दुर्गावती को देखना चाहता था। उसने रानी दुर्गावती को एक उपहार भेजा। इसे नज़राना कहा जाता था। दुर्गावती के दरबारियों ने जब उस नज़राने के पिटारे को खोला, तो उसमें से एक चरखा निकला। दुर्गावती इसका मतलब समझ गई कि बादशाह अकबर इस चरखे के द्वारा यह सूचित करना चाहता है कि औरतों का काम तो बस घर में बैठकर चरखे पर सूत कातना ही है। यही करो, राजकाज से आपका क्या लेना देना। रानी का चेहरा गुस्से से ताँबा बन गया। दरबारियों के हाथ म्यान से तलवार खींचने को एकदम मचले किन्तु रानी दुर्गावती जोश में होश खोने वालों में से नहीं थीं।

उसने सरदारों को शान्त रहने को कहा और अपने मन्त्री से मन्त्रणा कर बादशाह अकबर को जवाब में एक नज़राना भेजने को कहा।

जब यह नज़राना आगरा में अकबर के सामने रखा गया, तो अकबर ने पूछा–इसमें क्या है?

रानी दुर्गावती के सरदारों ने जवाब दिया–बादशाह, इसमें हमारी रानी दुर्गावती ने आपके लिए जवाबी नज़राना भेजा है।

अकबर ने पेटी को खुलवाया, तो उसमें से एक बढ़िया धुनक निकला। रुई के लिए पिंजारियों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला खास सोटा भी उसमें था। अब हैरान होने की बारी अकबर की थी। वह समझ गया कि रानी दुर्गावती ने उनकी शरारत का मुँहतोड़ जवाब दिया है कि तुम तो पिंजारे हो, रुई की पिंजाई करते रहो, राजकाज से तुम्हें क्या वास्ता? रानी दुर्गावती की इस धृष्टता के कारण अकबर तो झेंप कर रह गया। वह समझ गया कि रानी बहुत चतुर है।

इधर रानी भी समझ गई थी कि उसके जवाबी नज़राने का अर्थ युद्ध ही होगा। रानी का अनुमान ठीक ही निकला। अकबर ने विशाल सेना देकर आसफखान सरदार को गढ़ामण्डला पर चढ़ाई करने के लिए रवाना किया। आसफखान को हिदायत दी कि किसी महिला या बच्चे को कोई कष्ट न पहुँचाए तथा निहत्थे नागरिकों को भी तंग न करे।

युद्ध प्रारम्भ करने से पहले आसफखान ने रानी दुर्गावती को कहला भेजा कि यदि वह बादशाह की अधीनता स्वीकार कर लेती है, तो उनके अधीन गढ़ामण्डला का पूरा राज्य उन्हें इनाम में दिया जा सकता है और अन्य कई इलाके भी उन्हें उपहार के रूप में दिए जा सकते हैं। इस सन्देश का जो उत्तर दुर्गावती ने आसफखान को भेजा वह बड़ा ही ओजपूर्ण, वीरता व देशभक्ति से भरा था। उसने जवाब दिया– यदि तुम्हारी यही पेशकश थी तो इतनी सारी सेना साथ क्यों लाए हो? तुम अकबर का साथ छोड़कर मेरे राज्य में मेरे अधीन सरदार बन जाओ, तो मैं तुम्हें बहुत बड़ा वजीर बना दूँगी।

आसफखान ने लड़ाई लड़ने के लिए गढ़ा से पश्चिम में भेड़ाघाट की ओर एक मोर्चा लगाया। गढ़ा के दक्षिण पूर्व में बरेला गाँव में जो मोर्चा जमाया गया, उसका संचालन आसफखान ने स्वयं अपने हाथ में लिया। यहीं पर अन्तिम लड़ाई लड़ी गई।

आसफखान रानी का वह रणचण्डी रूप देखकर काँप गया। रानी के दुर्भाग्य से उसकी सेना पीछे से गढ़ामण्डला की नदी और बाकी तीनों ओर से आसफखान की सेना से घिर गई। तभी अचानक बेमौसम ही उस नदी में बाढ़ आ गई। वीरनारायण इस लड़ाई में घायल हो गया। रानी ने उसे अपने विश्वासी सरदारों के संरक्षण में चौरागढ़ पहुँचने का आदेश दिया। उसके बाद दुर्गावती अपने बचे हुए 300 सिपाहियों को लेकर मोर्चे पर डट गई। खूब जमकर लड़ाई हुई। शत्रु की सेना संख्या में चौगुनी थी। अचानक एक तीर सनसन करता आया और रानी

की एक आँख में घुस गया। रानी ने उसे दूसरे हाथ से जोर से खींच निकाला तो अवश्य किन्तु उसकी नोक आँख में ही रह गई। असीम वेदना सहते हुए रानी ने अपने घोड़े की बाग दाँतों में ली और दोनों हाथों से तलवार चलाकर मार काट करती निकलीं। आसफखान रानी की वीरता का कायल हो गया। तभी रानी ने देखा कि आसफखान विकट हँसी हँसता हुआ उसकी ओर बढ़कर उसे जीवित ही पकड़ लेना चाहता है। रानी लपक कर दूर हो गई और अपनी देह की पवित्रता को बनाए रखने के लिए अपनी ही छुरी निकाल कर अपने पेट में घोंप ली। इस प्रकार रानी दुर्गावती वीरगति को प्राप्त हुई। उसने अपने प्राण दे दिए किन्तु अपना सम्मान नहीं बेचा अपना बलिदान कर दिया किन्तु देशाभिमान नहीं छोड़ा।

आज भी बरेला गाँव में दुर्गावती की समाधि बनी हुई है। जिस पर लिखी पंक्तियों को लोग बड़े अभिमान से गाते हैं उन पंक्तियों का भावार्थ है:–

''जब दुर्गावती रण को निकलीं
हाथों में थीं तलवारें दो।
गुस्से से चेहरा ताँबा था,
आँखों से शरारे उड़ते थे।
घोड़े की बागें दाँतों में
हाथों में थीं तलवारें दो।''

अभ्यास

पाठ से

1. जबलपुर के पास कौन–सा प्रसिद्ध किला है?
2. दुर्गावती फुरसत के समय क्या करती थीं?
3. दलपतशाह ने मन ही मन क्या निश्चय कर लिया था?
4. महावत बालिका दुर्गावती के किस कार्य को देखकर आश्चर्यचकित हो गया?

आपकी समझ

1. रानी दुर्गावती को उपहार भेजने के पीछे राजा अकबर की क्या मंशा थी?
2. रानी दुर्गावती ने अकबर द्वारा भेजे गए उपहार का क्या जवाब दिया?
3. आसफखान रानी की वीरता का कायल क्यों हुआ?

कुछ करने के लिए

दुर्गावती की तरह चाँदबीबी ने अकबर की सेना से लोहा लिया था। विद्यार्थी उसकी कथा पुस्तकालय से पुस्तक लेकर पढ़ें।

अध्यापक के लिए

देश के लिए समर्पित अन्य वीरांगनाओं के विषय में बताते हुए नारियों के योगदान की चर्चा करें।

वह मनुष्य सच में बुद्धिमान है जो क्रोध की स्थिति में भी तटस्थ रहता है। –शेख सादी

9 प्रकृति वर्णन

भारतभूमि प्रकृति की क्रीड़ास्थली है। यहाँ प्रकृति नित नए परिधान में अनूठे शृंगार के साथ अपने विभिन्न रूप दिखाती है। जैसे कोई पारखी ही किसी कलाकार की रचना को परखकर उससे आनन्दित हो सकता है तथा उसका वर्णन कर सकता है, उसी प्रकार प्रकृति का आनन्द तो बहुत लोग लेते हैं किन्तु उसका वर्णन कोई चतुरचितेरा ही कर सकता है। अनेक महान् कवियों ने अपनी–अपनी शैली में प्रकृति के विविध रूपों का वर्णन किया है। महाकवि तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में प्रकृति का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया है। प्रकृति–वर्णन से जुड़ी कुछ चौपाइयाँ नीचे दी जा रही हैं–

1. बिटप बिसाल लता अरुझानी। बिबिध बितान दिए जनु तानी ।।
   कदलि ताल बर धुजा पताका। देखि न मोह धीर मन जाका ।।

   HkkokFkZ– पम्पासरोवर की सुन्दरता का वर्णन करते हुए वे कहते हैं कि विशाल वृक्षों में लताएँ उलझी हुई ऐसी मालूम होती हैं मानो नाना प्रकार के तम्बू तान दिए गए हैं। केला और ताड़ सुन्दर ध्वजा–पताका के समान हैं। इन्हें देखकर वही नहीं मोहित होता, जिसका मन धीर है।

2. बिबिध भाँति फूले तरु नाना। जनु बानैत बने बहु बाना।
   कहुँ कहुँ सुन्दर बिटप सुहाए। जनु भट बिलग बिलग होइ छाए।।

   HkkokFkZ– अनेक वृक्षों में रंग–रंग के फूल खिले हुए ऐसे लगते हैं मानो अलग–अलग वेश में सिपाही खड़े हैं। कहीं–कहीं जो विरले पेड़ सुन्दर और सुहावने दीख पड़ते हैं वे ऐसे लगते हैं मानो कोई–कोई योद्धा सेना से दूर जा खड़े हों।

3. कूजत पिक मानहुँ गज माते। ढेक महोख ऊँट बिसराते ।।
   मोर चकोर कीर बर बाजी। पारावत मराल सब ताजी।।

   HkkokFkZ– कोयलें कूक रही हैं, मानो मतवाले हाथी चिंघाड़ रहे हैं। ढेक और महोख पक्षी मानो ऊँट और खच्चर हैं। मोर, चकोर, तोते, कबूतर और हंस मानो सब ताजी (अरबी) घोड़े हैं।

4. तीतिर लावक पदचर जूथा। बरनि न जाइ मनोज बरूथा ।।
रथ गिरि सिला दुन्दुभी झरना। चातक बन्दी गुन गन बरना।।

HkkokFk– तीतर और बटेर पैदल सिपाहियों के झुण्ड हैं। सौन्दर्य के देवता कामदेव की सेना का वर्णन नहीं हो सकता। पर्वतों की शिलाएँ, रथ और जल के झरने नगाड़े हैं। पपीहे भाट हैं जो अपने राजा के गुणों का वर्णन करते हैं।

5. मधुकर मुखर भेरि सहनाई। त्रिबिध बयारि बसीठीं आई ।।
चतुरंगिनी सेन सँग लीन्हें। बिचरत सबहि चुनौती दीन्हें ।।

HkkokFk– भौरों की गुंजार भेरी और शहनाई हैं। शीतल, मन्द और सुगन्धित हवा मानो दूत बनकर आई है। इस प्रकार चतुरंगिणी सेना साथ लिए कामदेव मानो सबको चुनौती देता हुआ विचर रहा है।

6. बिकसे सरसिज नाना रंगा। मधुर मुखर गुंजत बहु भृंगा।।
बोलत जलकुक्कुट कलहंसा। प्रभु बिलोकि जनु करत प्रसंसा।।

HkkokFk– सरोवर में रंग–बिरंगे कमल खिले हुए हैं। बहुत–से भौंरे मधुर स्वर से गुंजार कर रहे हैं। जल के मुर्गे और राजहंस बोल रहे हैं, ऐसा लगता है जैसे प्रभु को देखकर उनकी प्रशंसा कर रहे हैं।

7. ताल समीप मुनिन्ह गृह छाए। चहु दिसि कानन बिटप सुहाए ।।
चम्पक बकुल कदम्ब तमाला। पाटल पनस परास रसाला।।

HkkokFk– उस झील (पम्पासरोवर) के समीप मुनियों ने आश्रम बना रखे हैं। उसके चारों ओर वन में सुन्दर वृक्ष हैं– चम्पा, मौलसिरी, कदम्ब, तमाल, पाटल, कटहल, ढाक और आम आदि।

8. नव पल्लव कुसुमित तरु नाना। चंचरीक पटली कर गाना।।
सीतल मन्द सुगन्ध सुभाऊ। सन्तत बहइ मनोहर बाऊ ।।

HkkokFk– बहुत प्रकार के वृक्ष नए–नए पत्तों और पुष्पों से युक्त हैं। भौरों के समूह गुंजार कर रहे हैं। स्वभाव से ही शीतल, मन्द सुगन्धित एवं मन को हरने वाली हवा सदा बहती रहती है।

प्रकृति जीवनदायिनी है। प्रकृति के सौन्दर्य का आनन्द तो हम सभी लेते हैं परन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इसकी सुरक्षा का दायित्व भी हमारा ही है। बच्चो, ज़रा सोचो जिन

पेड़–पौधों से हम फल–फूल प्राप्त करते हैं, जिनकी शीतल छाया में हम विश्राम करते हैं और जो पेड़–पौधे हमें प्राण–वायु प्रदान करते हैं, क्या उनके प्रति हमारा कोई कर्त्तव्य नहीं है? निश्चित रूप से उनकी सुरक्षा करना, नए पेड़–पौधे लगाना और पर्यावरण प्रदूषण कम करने में अपना योगदान देकर ही हम प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रख सकते हैं।

अभ्यास

पाठ से

1. केला और ताड़ के वृक्षों की तुलना किससे की गई है?
2. झरनों के जल की ध्वनि कैसी प्रतीत होती है?
3. प्रकृति की कौन–सी वस्तु दूत का कार्य करती हुई प्रतीत हो रही है?
4. प्रकृति की समूची सुन्दरता को किसकी सेना के रूप में देखा गया है?
5. प्रस्तुत चौपाइयों में किन–किन पशु–पक्षियों एवं पेड़–पौधों के नाम आए हैं?

आपकी समझ

भारत में समय–समय पर अनेक ऋतुएँ आती हैं। आपको कौन–सी ऋतु सबसे अधिक अच्छी लगती है और क्यों?

कुछ करने के लिए

1. 'अरण्यकाण्ड के कथानक को पढें अथवा/सुनें।
2. अपने पास–पड़ोस को साफ–सुथरा बनाए रखने के लिए सामूहिक रूप से कार्य करें और लोगों को जाग्रत करें।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को यह बताएँ कि कवियों ने प्रकृति में वीरता तथा भक्ति के भिन्न–भिन्न उपमानों को वैसे ही देखा जैसा तुलसीदास जी ने कहा है– जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

हम प्रकृति की आज्ञा का पालन किए बिना उस पर शासन नहीं कर सकते। –बेकन

10 अनूठा बलिदान

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में कूका आन्दोलन का विशेष स्थान है। गुरु रामसिंह के सभी शिष्य कूका नाम से जाने जाते हैं। आप जानना चाहेंगे कि कूका से क्या तात्पर्य है? जब गुरु के अनुयायी आराधना करते तो बाहरी संसार को बिलकुल भूल जाते थे। वे इतने भावविभोर हो जाते थे कि उनके कण्ठ से कूक (एक प्रकार की ध्वनि) निकलने लगती थी, इसलिए वे कूका कहलाए। कूका अपने गुरु को ही बादशाह मानते थे, जबकि उस समय महारानी विक्टोरिया का शासन था। गुरु के इन शिष्यों ने अंग्रेज सरकार से जमकर टक्कर ली।

सन् 1872 में कूकाओं की ओर से माँग की गई कि गौ–हत्या पर रोक लगाई जाए। अंग्रेज नहीं माने। एक दिन की बात है कि कुछ कसाई गौएँ ले जा रहे थे। कूकाओं ने कसाइयों को ललकारा–''गौएँ छोड़कर चले जाओ, वरना सब मारे जाओगे।'' कसाई अंग्रेजों की शह पर काम कर रहे थे। उन्होंने अनसुना कर दिया तथा गौओं के झुण्ड लेकर लगातार आगे बढ़ते रहे। कूकाओं के सब्र का बाँध टूट गया। उन्होंने कसाइयों को पकड़कर बाँध लिया। इतने में ही पुलिस आ गई। कूकाओं और पुलिस का आमने–सामने युद्ध हुआ। कूकाओं की वीरता के सामने पुलिस ठहर न सकी और भाग खड़ी हुई। मलौंध के किले पर कूकाओं ने कब्जा कर लिया। इतना ही नहीं, मालेर कोटला महल तक अंग्रेजों का नामोनिशान न रहा। उन दिनों वहाँ के डिप्टी कमिश्नर मिस्टर काबेन थे। उन्होंने भारी फौज को बुलाकर कूका आन्दोलन दबा दिया।

अंग्रेजी फौज ने 50 कूकाओं को पकड़ लिया। सभी को लुधियाना लाया गया। इन कूकाओं में एक बालक बिशनसिंह भी था। काबेन ने आदेश दिया कि सभी बन्दी कूकाओं को तोप से उड़ा दिया जाए। जिस समय आदेश दिया गया काबेन की पत्नी भी वहीं थी। उसे कूका बिशनसिंह पर बड़ी दया आई। उसने अपने पति काबेन से उस बच्चे को छोड़ देने की प्रार्थना की।

निर्दयी काबेन को पत्नी की बात जरा भी अच्छी नहीं लगी। उसने पत्नी की ओर क्रोध से घूरा और कूकाओं के गुरु को अपशब्द कहने लगा। फिर उसने बिशनसिंह से कहा–''तुम अपने आपको गुरु का शिष्य होने से इन्कार कर दो तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।''

गुरु के प्रति अपशब्द सुनकर बालक पहले ही क्रोध में भरा बैठा था। काबेन की इस बात ने उसे और भड़का दिया। वह फुर्ती से उठा और झपटकर दोनों हाथों से काबेन की दाढ़ी पकड़ ली। काबेन ने बहुत प्रयत्न किया किन्तु अपनी दाढ़ी नहीं छुड़ा पाया। ''इसके दोनों हाथ काट दो'' दर्द से कराहते हुए काबेन चिल्ला पड़ा। बालक के दोनों हाथ काट दिए गए किन्तु आश्चर्य की बात कि कटे हाथों से भी दाढ़ी नहीं छूटी। हाथ कटते ही बिशनसिंह धरती पर गिरकर तड़पने लगा और कुछ देर बाद ही उसके प्राणपखेरू उड़ गए।

शेष सभी कूकाओं को काबेन के आदेश पर तोपों के मुँह से बाँध कर उड़ा दिया गया। गुरु के प्रति भक्ति–भावना रखने वाले तथा अंग्रेजों से घृणा करने वाले देशभक्त बिशनसिंह ने अपना बलिदान दे दिया। उसने सिद्ध कर दिया कि भारतीय अपने गुरु और देश के सम्मान की रक्षा करने में मौत से भी नहीं डरते। ऐसे ही वीर सपूतों को पाकर भारतमाता निहाल हो उठी। स्वतन्त्र भारत सदैव उनका ऋणी रहेगा। निम्नलिखित पंक्तियाँ सम्भवतः बिशनसिंह की भावनाओं को प्रकट करती हैं –

tk gkj eku y] >d tk,] pd tk,
ekuo dgyku dk ml dk D;k gd g\
l?kkk dj tk] t> vkj Vdjk,
tx e thu dk ml dk gd c'kd gA

अभ्यास

पाठ से

1. गुरु रामसिंह के शिष्य किस नाम से जाने जाते थे?
2. कूका अपने गुरु को क्या मानते थे?
3. मलौंध के डिप्टी कमिश्नर का क्या नाम था?
4. 1872 में कूकाओं के आन्दोलन का क्या उद्देश्य था?

आपकी समझ

1. 'कूका' शब्द से क्या तात्पर्य है?
2. गुरु के प्रति अपशब्द सुनकर बिशनसिंह ने विरोध कैसे प्रकट किया?
3. बालक बिशनसिंह के बलिदान ने क्या सिद्ध कर दिखाया?

कुछ करने के लिए

पुस्तकालय से वीर हकीकतराय तथा गुरुगोविन्द सिंह के पुत्र जोरावर सिंह व फतेहसिंह की कहानियाँ पढ़ें और कक्षा में चर्चा करें।

अध्यापक के लिए

1. विद्यार्थियों को वीर बालकों के विषय में पत्र–पत्रिकाओं में छपने वाले लेखों से अवगत कराएँ।
2. गणतन्त्र दिवस पर पुरस्कृत साहसी बालकों के कारनामों का परिचय दें।

वतन की आबरु का पास (गौरव) देखें कौन करता है?
सुना है आज मकतल (बलिस्थल) में हमारा इम्तहाँ होगा। –अशफाक उल्ला खाँ

11 गणितज्ञ भास्कराचार्य

भास्कराचार्य का जन्म 1114 ई. में हुआ था किन्तु उनके जन्मस्थान के बारे में विद्वान एकमत नहीं हैं। भास्कर ने अपना गौत्र शांडिल्य और मूल स्थान विज्जडविड बताया है। उन्होंने लिखा है –

**vklhr lg; dykpykfJrij =fo|fo}Ttu]
Ukkuk lTtu/kkfEu foTtMfoM 'kkfMY; xk=k f}t%AA

उपर्युक्त कथन के आधार पर कुछ विद्वानों ने उनका जन्मस्थान सह्याद्रि पर्वत की घाटियों में से विज्जडित ग्राम माना है। एक सम्भावना यह भी है कि गोदावरी के निकट विज्जडविड भास्कर का निवास स्थान है।

भास्कराचार्य के समय भारत बड़ी विषम परिस्थितियों से गुजर रहा था। मुगलों के आक्रमण और धर्मान्धता के बढ़ते प्रभाव के कारण राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का ह्रास हो रहा था। समाज और संस्कृति पददलित हो रही थी। ऐसी विषम परिस्थितियों में गणित और ज्योतिष के क्षेत्र में भास्कराचार्य ने नवीन शोध किए तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की।

भास्कराचार्य के पिता महेश्वर ने ही उन्हें गणित की शिक्षा दी जो स्वयं एक गणितज्ञ थे। उनके पुत्र लक्ष्मीधर और पौत्र गंगदेवा भी खगोलविद् एवं गणितज्ञ थे। भास्कराचार्य ने 'सूर्य सिद्धान्त; सिद्धान्त शिरोमणि' 'करण कौतूहल' तथा 'रसगुण' ग्रन्थों की रचना की। सिद्धान्त शिरोमणि' चार भागों में विभाजित है– लीलावती, बीजगणित, ग्रहमणिताध्याय, गोलाध्याय। इस ग्रन्थ का लीलावती खण्ड और 'सूर्य सिद्धान्त' बहुत विख्यात हैं। यूरोपियन विद्वानों ने भी इनकी बहुत प्रशंसा की है। सन् 1587 में मुगल सम्राट अकबर ने फैजी द्वारा 'लीलावती' का अनुवाद फारसी भाषा में तथा सन् 1810 में एच.टी.कोलबुक ने इसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में किया था। इसमें 278 पद्य हैं। भास्कराचार्य की पुत्री का नाम लीलावती था, अतः उन्होंने अपना ग्रन्थ लीलावती को समर्पित किया। इस पुस्तक के नामकरण के विषय में एक रोचक प्रसंग मिलता है। ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी की थी कि यदि लीलावती का विवाह एक विशेष दिन और मुहूर्त में नहीं हुआ तो वह विधवा हो जाएगी। भास्कराचार्य ने ज्योतिष गणना के आधार पर वह विशेष दिन और मुहूर्त खोज निकाला। सही समय पता लगाने के लिए उन्होंने एक नाड़िका यन्त्र (एक प्रकार की जलघड़ी जिसका प्रयोग प्राचीन ज्योतिषी काल– गणना के लिए करते थे) स्थापित किया तथा लीलावती को उसके पास जाने के लिए मना किया। लेकिन लीलावती कौतूहलवश जब उस घड़ी को देख रही थी तो उसकी नाक की लौंग का मोती उस जलपात्र में गिर पड़ा। मोती जलघड़ी के छिद्र में फँस गया तथा उससे पानी कम हो गया। परिणामतः विवाह के मुहूर्त की गणना गलत हो गई। विवाह के एक सप्ताह पश्चात् ही लीलावती के पति की चट्टान से गिरकर मृत्यु हो गई। भास्कराचार्य ने इस दुर्घटना के लिए अपने आपको दोषी माना। उन्होंने अपनी पुत्री को सांत्वना देते हुए कहा–''मैं तुम्हारे नाम से एक ऐसा ग्रन्थ रचूँगा जो अमर कीर्ति बना जाएगा, क्योंकि सुनाम एक प्रकार का दूसरा जीवन ही तो है।''

लीलावती नामक ग्रन्थ का प्रारम्भ उस समय में प्रचलित भार तथा माप की इकाइयों के वर्णन से होता है। इसमें दसगुणोत्तर प्रणाली से अंक दर्शाए गए हैं। इसमें अंकगणित की बीस संक्रियाएँ संकलन (जोड़), व्यकलन(घटा), गुणन (गुणा), विभाजन (भाग), वर्ग, वर्गमूल, घनमूल, वस्तु–विनिमय, आदि तथा आठ सारिणियों के मिश्रण, खुदाई, भण्डार, शंकु की छाया, अनाज का ढेर आदि का विवेचन है। इसके अतिरिक्त इसमें द्वितीय घात के निर्धार्थ समीकरणों त्रिभुजों, चतुर्भुजों, वृत्तों के क्षेत्रफल, पिरामिड आदि के घन सम्बन्धी प्रश्न भी दिए हैं। कुछ प्रश्न देखिए–

प्रतिलोभन का प्रश्न – एक तीर्थयात्री ने अपनी राशि का आधा भाग प्रयाग में, शेष का 2/9 भाग काशी में, फिर शेष भाग का 1/4 भाग सड़क–कर के रूप में दे दिया। जो बचा, उसका 6/10 गया में दिया फिर उसके पास 63 शेष रहे। मुझे बताओ कि उसके पास शुरु में कितनी राशि थी?

समकोण त्रिभुज का प्रश्न देखिए– एक स्तम्भ की जड़ में साँप का बिल बना हुआ है तथा एक मोर उसकी चोटी पर बैठा है। स्तम्भ की ऊँचाई से तीन गुणा फासले पर साँप को बिल की ओर आते देखकर मोर उस पर तिरछा झपटा। झटपट यह बताओ कि ये दोनों साँप के बिल से कितने हाथ की दूरी पर मिले, यदि उन दोनों ने समान फासला तय किया हो?

'सिद्धान्त शिरोमणि' ग्रन्थ के बीजगणित खण्ड में वर्णित बीजगणित सम्बन्धी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण खोजों व सामग्री का उल्लेख यहाँ उपादेय नहीं है। सामान्य व्यक्ति या विद्यार्थी इनको नहीं समझ सकता। केवल विशेष स्तर के विद्यार्थी ही इसे समझ सकते हैं।

भास्कराचार्य ने पृथ्वी के आधार के सम्बन्ध में लोगों की मिथ्या धारणाओं और भ्रमों का समाधान किया तथा प्रमाण सहित सिद्ध किया कि पृथ्वी निराधार है और उसके चारों ओर विद्यमान ग्रह तथा नक्षत्र परस्पर एक–दूसरे को खींचे हुए हैं। पृथ्वी धँसती नहीं है तथा अन्य ग्रहों के समान शून्य में निराधार स्थित है।

उन्होंने लिखा है कि सूर्य की गति क्रान्ति–वृत्त एक समान नहीं रहती। उनका यह कथन आधुनिक अनुसन्धानों से सत्य सिद्ध हुआ है। यही नहीं उन्होंने जर्मन विद्वान केपलर के, 'गोजे की सतह और उसके घनफल' को निकालने के नियम का पूर्वाभ्यास कर लिया था। न्यूटन से 500 वर्ष पहले ही उन्होंने गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त का विकास कर लिया था। उन्होंने लिखा–''आकृष्टि शक्तिश्च मही तपायत स्वस्थं गुरु स्वामि मुखं स्वशक्त्या''। अर्थात् भूमि में आकर्षण शक्ति है, इसलिए आकाश में स्थित भारी पदार्थों को भूमि अपनी शक्ति से अपनी ओर खींच लेती है।

भास्कराचार्य के पास आधुनिक युग की शक्तिशाली दूरबीनों की तरह कोई दूरबीन नहीं थी। अतः वे केवल रात में ही बाँस की नलिका की सहायता से ग्रहों और नक्षत्रों का निरीक्षण किया करते थे। वे ग्रह–नक्षत्रों के उदय–अस्त व गति से सम्बन्धित अपने निष्कर्षों को पुस्तक मे भी लिखते थे। उनके द्वारा स्थापित सिद्धान्तों–चक्रवाल (इन्वर्स साइक्लिंग), समाकलन गणित (इंटीग्रल केलकुलस), अवलकल गणित (डिफरेन्शल केल कुलस), अवकल गुणांक (डिफरेंशल कोफी शंट), तात्कालिक गति (ग्रहों की गति) को आधुनिक वैज्ञानिक भी सत्य या सत्य के निकट मानते हैं। डॉ. स्पोटवुड ने रॉयल सोसायटी की पत्रिका में लिखा है– ''भास्कराचार्य की विवेचन सूक्ष्मता उच्च कोटि की है, यह हमें स्वीकार करना होगा। उन्होंने जिन गणित ज्योतिष सिद्धान्तों की स्थापना की है और वह जिस दर्जे की है, उसकी तुलना हम आधुनिक गणित–ज्योतिष से नहीं कर सकते हैं।''

भारत के इस महान गणितज्ञ का 65 वर्ष की आयु में सन् 1179 ई. में देहान्त हो गया। भास्कराचार्य की गणित–विज्ञान को अनुपम देन को सम्मान देने के लिए भारत सरकार ने अपने एक उपग्रह का नाम 'भास्कर' रखा है।

अभ्यास

पाठ से

1. भास्कराचार्य के समय भारत की परिस्थितियाँ कैसी थीं?
2. 'नाड़िका' यन्त्र' की गणना क्यों गलत हो गई?
3. 'लीलावती' अध्याय का नामकरण किस आधार पर हुआ?
4. भास्कराचार्य द्वारा रचित ग्रन्थों के नाम बताइए।

आपकी समझ

1. भास्कराचार्य के जन्मस्थान के विषय में विद्वानों के क्या–क्या विचार हैं?
2. पारिवारिक वातावरण बालक के मन को कैसे प्रभावित करता है? उदाहरण सहित बताइए।
3. ज्ञान–विज्ञान के विकास के लिए राष्ट्रीय परिस्थिति का अनुकूल होना क्यों आवश्यक है?

कुछ करने के लिए

पाठ में दिए गए मोर और साँप वाले उद्धरण को समझते हुए अध्यापक की सहायता से समकोण त्रिभुज के विषय में जानें।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों को प्राचीन भारत में गणित के विकास पर अतिरिक्त जानकारी दें।

बिना परिश्रम के उन्नति नहीं होती। –सोफोक्लीज़

12 देश की धरती

मन समर्पित, तन समर्पित,
और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ!

माँ, तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किन्तु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी
कर दया स्वीकार लेना वह समर्पण।
गान अर्पित, प्राण अर्पित,
रक्त का कण–कण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।

कर रहा आराधना मैं आज तेरी,
एक विनती तो करो स्वीकार मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण–क्षण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।

तोड़ता हूँ मोह का बन्धन, क्षमा दो,
गाँव मेरे, द्वार, घर, आँगन क्षमा दो,
देश का जयगान अधरों पर सजा है
देश का ध्वज हाथ में केवल थमा दो।
ये सुमन लो, ये चमन लो,
नीड़ का तृण–तृण समर्पित,
चाहता हूँ देश की धरती तुझे कुछ और भी दूँ।

jkeokorkj R;kxh

अभ्यास

पाठ से

1. कवि देश को क्या–क्या समर्पित करना चाहता है?
2. वह थाल में क्या सजाकर लाना चाहता है?
3. कवि ने राष्ट्र–आराधना में कौन–सी विनती स्वीकार करने का निवेदन किया है?
4. कविता में कवि ने माँ कहकर किसे पुकारा है?
5. कवि ने हाथ में राष्ट्रध्वज थमाने का आग्रह किससे किया है?

आपकी समझ

1. कवि देश की धरती को अपना सर्वस्व क्यों अर्पित करना चाहता है?
2. वह अपने गाँव, द्वार, घर, आँगन से क्षमा क्यों माँगता है?

कुछ करने के लिए

विद्यार्थी कविता को कण्ठस्थ कर प्रार्थना–सभा में प्रस्तुत करें।

अध्यापक के लिए

'माँ तुम्हारा ऋण बहुत है' पंक्ति का भाव स्पष्ट करते हुए मातृभूमि के ऋण के सम्बन्ध में चर्चा करें।

शहीदों के मज़ारों पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा। –अशफाक़ उल्ला खां

13 ऊधम सिंह

भारतीय क्रान्तिकारियों में ऊधम सिंह एक ऐसे क्रान्तिवीर के रूप में प्रसिद्ध हैं जिन्होंने सात समुद्र पार जाकर अंग्रेजों से भारतीयों के खून का बदला लिया। ऊधम सिंह के बचपन का नाम शेरसिंह था। शेरसिंह बचपन से ही बहुत साहसी थे। उनके बचपन की एक घटना से उनकी वीरता प्रकट होती है। शेरसिंह के पिता जहाँ चौकीदार थे, वह पंजाब प्रान्त का एक छोटा–सा स्टेशन था। स्टेशन देहात में था और उसके चारों तरफ जंगल था। जंगल में भेड़िए, जंगली सुअर, तेंदुए आदि काफी संख्या में थे। इस इलाके में भेड़िए बड़े भयानक थे और स्टेशन पर रहने वाले कर्मचारियों की गाय–भैंसों को अपना शिकार बना लेते थे। एक दिन शैतान भेड़िए ने बकरी को अपना शिकार बना लिया। शेरसिंह उस भेड़िये से अपनी गाय–भैसों की रक्षा करना चाहते थे। अतः उन्होंने भेड़िये को मारने का मन बना लिया।

शेरसिंह उसका इन्तजार करने लगा। आठ–दस दिन शेरसिंह सो न सका। एक दिन बारह बजे उसने एक भेड़िए को आते हुए देखा। शेरसिंह ने रस्सी का एक फन्दा भेड़िए के गले में फेंका और दूसरा सिरा दीवार से निकले हुए एक लोहे के मजबूत कड़े में बाँध दिया। फन्दा फँसने से भेड़िया मर गया। शेरसिंह की बहादुरी पर सभी गर्व अनुभव कर रहे थे।

पिता और भाई की मृत्यु के पश्चात् उनका पालन–पोषण एक अनाथाश्रम में हुआ। उस अनाथाश्रम के संचालक जयचन्द्र शर्मा क्रान्तिकारी विचारों के थे। उनसे प्रभावित होकर ही शेरसिंह में देशभक्ति की भावना बलवती हुई और वे क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लेने लगे। शेरसिंह क्रान्तिकारियों की चिट्ठियों को यथा स्थान पहुँचाने का कार्य सावधानीपूर्वक करते थे।

जलियाँवाला बाग का हत्याकाण्ड बालक शेरसिंह ने अपनी आँखों से देखा था जिसे देखकर उसका बालमन दहल गया था। शेरसिंह ने जनरल डायर को मारने की प्रतिज्ञा कर ली किन्तु गुजराँवाला का काण्ड देखकर वे अमृतसर से भाग गए। कुछ समय उपरान्त उन्हें पता चला कि जनरल डायर सात साल की लम्बी बीमारी के बाद लंदन में मर गया तो उसे अपनी असफलता पर दुख हुआ।

शेरसिंह ने तभी दूसरी प्रतिज्ञा की कि वह गुजराँवाला काण्ड के माइकल ओ डायर से भारतीयों के प्रति दिखाई गई क्रूरता का बदला लेगा। शेरसिंह 33 वर्ष की आयु में इंग्लैंड

गए और उन्होंने अपना नाम शेरसिंह से बदलकर ऊधम सिंह कर लिया। 3 मार्च, 1940 को लन्दन के केक्सटन हॉल में एक सभा का आयोजन होना था, जिसमें माइकल ओ डायर को भाषण देना था। ऊधम सिंह ने एक दिन पहले जाकर केक्सटन हॉल का निरीक्षण किया और दूसरे दिन जमकर खाना खाया। ऊधम सिंह ने केक्सटन हॉल पहुँचकर माइकल ओ डायर को उनके साथियों समेत गोलियों से भूनकर गुजराँवाला–काण्ड का बदला लिया और वीरतापूर्वक वहीं डटे रहे। ऊधम सिंह ने वहाँ से भागने का प्रयास नहीं किया। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और फाँसी की सजा सुनाई गई। अपने अन्तिम समय तक भी उनके मुँह से 'इन्कलाब जिन्दाबाद' व 'भारत माता की जय' जैसे नारे उच्चरित होते रहे।

अभ्यास

पाठ से

1. ऊधम सिंह ने भारतीयों के प्रति अंग्रेजी सरकार की क्रूरता का बदला कैसे लिया?
2. बचपन में ऊधम सिंह क्रान्तिकारियों की मदद कैसे करते थे?
3. ऊधम सिंह ने किस हत्याकाण्ड को अपनी आँखों से देखा?
4. ऊधम सिंह को किस बात का दुख था?

आपकी समझ

1. ऊधम सिंह का देश की आज़ादी में क्या योगदान था?
2. ऊधम सिंह के जीवन की किस घटना से आप प्रभावित हुए?
3. अपनी पहली प्रतिज्ञा की असफलता का ऊधम सिंह के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा?

कुछ करने के लिए

1. विभिन्न क्रान्तिकारियों के चित्र एकत्रित करके एक एलबम बनाएँ।
2. आप भी अपने जीवन में घटित किसी ऐसी घटना का वर्णन करें, जब साहस का परिचय दिया हो।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों के साथ ऐसे ही क्रान्तिकारियों के प्रेरक प्रसंग साँझा करें।

मनुष्य के पास बुद्धि और बल से बढ़कर श्रेष्ठ कोई दूसरी चीज़ नहीं। —महाभारत

14 गुरुपर्व

त्योहार हमारी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रतीक हैं। त्योहार हमारे जीवन में उत्साह का संचार करते हैं। वे हमें गौरवमयी इतिहास के मंगलमय मन्त्र सिखाते हैं। हमारे त्योहारों का आरम्भ किसी न किसी समाज सुधार के उद्देश्य को लेकर हुआ है। गुरु को सम्मान देने की परम्परा हमारी संस्कृति का महत्त्वपूर्ण अंग है। गुरु हमारे जीवन में भगवान् के समान होता है। कबीरदास तो गुरु को भगवान् से भी बड़ा मानते थे।

x# xkfcUn nkÅ [kM] dkd ykx ik;A
cfygkjh x# vkiuk] ftu xkfcUn fn;k feyk;AA

गुरु का जीवन में सर्वश्रेष्ठ स्थान है। साहित्य और शास्त्रों में गुरु की महिमा का बड़ा सुन्दर वर्णन हुआ है। सिख गुरुओं के जीवन से सम्बन्धित 'गुरुपर्व' एक महत्त्वपूर्ण त्योहार है। गुरुपर्व का शाब्दिक अर्थ है– गुरुओं की स्मृति में उत्सव। यहाँ हम उस त्योहार का उल्लेख कर रहे हैं जो सिखों के प्रथम गुरु श्री गुरुनानकदेव के जन्मोत्सव पर बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाता है। गुरुनानकजी का यह प्रकाशोत्सव कार्तिक मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है।

उनका जन्म 1469 ई. में तलवण्डी (ननकाना साहिब) में हुआ। उन्होंने अपने दो पुत्रों की अपेक्षा अपने योग्य शिष्य भाई लहणा (श्री गुरु अंगददेवजी) को गुरुगद्दी सौंपी। वे 22 सितम्बर, 1539 ई. को ज्योति में ज्योतिवत लीन हो गए। उन्होंने जाति–पाँति, छुआछूत तथा अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाई। जनता को सारहीन भ्रमों एवं भ्रान्तियों से मुक्त किया। उन्होंने समस्त संसार को परस्पर प्रेम, भाईचारे तथा नम्रतापूर्वक रहने का सन्देश दिया। उनकी पवित्र वाणी 'श्री गुरुग्रन्थ साहिब' में संकलित है। वे जनसामान्य की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान करने वाले महान विचारक थे तथा अपनी सुमधुर सरल वाणी से जनमानस के हृदय को झंकृत कर देने वाले महान सन्त कवि थे। उन्होंने बेहद सरल भाषा में समझाया कि सभी इन्सान एक–दूसरे के भाई हैं। ईश्वर सबका पिता है, फिर हम सन्तानो में भेद कैसे हो सकता है?

vcy vYykg uj mik;] कुnjr n lc cUnA
,d uj r lc tx miT;k] dku Hky dk eUnAA

गुरुनानकजी ने स्वयं एक आदर्श बनकर सामाजिक सद्भाव का उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने लंगर की परम्परा चलाई, जहाँ सभी जातियों के लोग एक साथ बैठकर एक पंक्ति में भोजन करते हैं। लंगर सेवा का ऐसा विशाल कार्यक्रम है जो बिना भेदभाव के होता है। जातिगत वैमनस्य को दूर करने के लिए उन्होंने संगत परम्परा शुरु की जहाँ हर जाति के लोग इकट्ठे होकर प्रभु की आराधना करते थे। इस प्रकार तत्कालीन सामाजिक परिवेश में गुरुनानकजी ने इन क्रान्तिकारी कदमों से एक ऐसे भाईचारे की नींव रखी जिससे धर्मजाति का भेदभाव खत्म हो गया।

गुरुपर्व का यह त्योहार निष्ठा, प्रेम, साहचर्य के साथ बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। इस अवसर पर गुरुद्वारों में ''श्रीगुरुग्रन्थसाहिब के अखण्ड पाठ' अर्थात् अविराम पाठ किए जाते हैं। गुरुपर्व से एक दिन पूर्व नगर कीर्तन अर्थात् शोभा यात्राएँ निकाली जाती हैं। इस पर्व की शोभा तब और भी बढ़ जाती है जब गंगा स्नान करने वालों के कानों में अमृतवाणी की मधुर ध्वनि पड़ती है। यह सुखद संयोग भारतीय धार्मिक सहिष्णुता का परिचय देता है। इनके शिष्य तलवारबाजी के जो करतब दिखाते हैं रणकौशल का प्रतीक हैं। गुरुद्वारों एवं अन्य स्थानों पर जगह–जगह लंगर चलाया जाता है, यह एक बड़ा सेवाकार्य है। गुरुनानकदेव ने अपने सिद्धान्तों से पूरे विश्व में मानवता एवं भाईचारे का अद्भुत सन्देश दिया है। हम सभी को उनके दिखाए मार्ग का अनुसरण कर श्रेष्ठ राह पर चलना चाहिए।

अभ्यास

पाठ से

1. 'गुरुपर्व' का शाब्दिक अर्थ क्या है?
2. गुरुनानकजी का जन्म कब हुआ?
3. गुरुनानक के योग्य शिष्य का नाम बताइए।
4. उनकी वाणी कौन–से ग्रन्थ में संकलित है?
5. 'अखण्ड–पाठ' का क्या अर्थ है?

आपकी समझ

1. गुरुनानकजी ने किसके विरुद्ध आवाज़ उठाई?
2. 'लंगर व्यवस्था' क्या है?
3. भाईचारे के विषय में उन्होंने क्या कहा?
4. गुरुग्रन्थ साहिब अनुपम कृति कैसे है?
5. गुरुपर्व कैसे मनाया जाता है?

कुछ करने के लिए

कार्तिक मास में मनाए जाने वाले अन्य त्योहारों की सूची बनाकर उनके विषय में जानें।

अध्यापक के लिए

गुरुनानकजी की शिक्षा एवं उपदेशों के विषय में विद्यार्थियों को बताएँ।

यह लोक कर्म–भूमि है और परलोक फल–भूमि है। –एर्रना (महाभारत, तेलुगु)

15 स्वावलम्बन

प्रत्येक माँ उस दिन का इन्तजार करती है कि कब उसकी सन्तान चलना शुरू करेगी और पिता उस समय का इन्तजार करता है कि कब उसकी सन्तान अपने पैरों पर खड़ी होगी।

दोनों की आकांक्षा एक ही है, उसकी सन्तान स्वावलम्बी बने, स्वावलम्बन स्व (अपना) अवलम्बन (सहारा) अर्थात् अपना सहारा स्वयं बनना। दूसरों की सहायता पर निर्भर न होकर स्वयं अपनी शक्ति मनोबल व योग्यता के अनुसार अपने कार्य स्वयं करना। स्वावलम्बी शब्द को दो अर्थों में लिया जाता है–

1. अपने छोटे–बड़े दैनिक कार्य स्वयं करना।
2. बड़े होकर धन बल से सशक्त होकर आत्मनिर्भर होना।

स्वावलम्बन से यह तात्पर्य है कि जो कार्य हम स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए दूसरों पर निर्भर न रहें। जिन व्यक्तियों में स्वावलम्बन की भावना व आदत होती है, उनमें आत्मविश्वास भी होता है और ऐसे व्यक्ति अपने परिश्रम के बल पर उन्नति करते हैं। स्वावलम्बन से मनुष्य का चरित्र बल भी बढ़ता है।

विश्व के सभी महान व्यक्तियों ने अपने ही प्रयासों से उन्नति की है। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, लालबहादुर शास्त्री, नेपोलियन बोनापार्ट व महात्मा गाँधी के जीवन स्वावलम्बन के ज्वलन्त उदाहरण हैं। एक दिन संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन अपने जूते पॉलिश कर रहे थे। किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा कि आप स्वयं ही अपने जूते पॉलिश करते हैं? उत्तर में उन्होंने उस व्यक्ति से कहा– 'अपने कार्य स्वयं करने में कोई शर्म नहीं होनी चाहिए।'

बच्चो, एक छोटी–सी घटना ही व्यक्ति के जीवन को बदल देती है।

एक परिवार में रमेश और सुरेश दो भाई थे। रमेश आयु में सुरेश से बड़ा था। एक दिन माँ ने रमेश को चक्की से अनाज पिसवाकर लाने को कहा। घर का यह कार्य दो–तीन वर्षों से रमेश ही कर रहा था। परन्तु इस बार उसे यह कार्य करने में शर्म महसूस होने लगी। कारण यह था कि उसकी मित्रता राज नाम के एक धनवान लड़के से हो गई थी। रमेश को बार–बार यह बात परेशान कर रही थी कि राज ने अगर मुझे साइकिल पर गेहूँ की बोरी ले जाते हुए देख लिया तो.....। इस स्थिति से बचने के लिए उसने अपने छोटे भाई को बहला–फुसलाकर गेहूँ की बोरी लेकर चलने के लिए तैयार किया। सुरेश साइकिल पर गेहूँ की बोरी लेकर आगे–आगे चल रहा था, रमेश हाथ हिलाता ठीक उसके पीछे। जब दोनों चक्की के पास पहुँचे तो रमेश ने देखा कि राज साइकिल पर गेहूँ की बोरी लादे वहाँ पहले से ही खड़ा है। यह देखकर रमेश चौंक गया। उसने राज से पूछा–क्यों राज! यह छोटा–सा काम करने के लिए नौकर को भी

तो भेज सकते थे। राज ने मुस्कराते हुए कहा–पिताजी कहते हैं कि कोई भी काम छोटा या बड़ा नहीं होता। हमें अपने काम स्वयं करने में शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए।

देखो बच्चो! अपने कार्य स्वयं करने चाहिएँ। मेहनत, ईमानदारी और बुद्धिपूर्वक कार्य करने से सुखपूर्वक जीवन जीया जा सकता है। अतः जीवन में स्वावलम्बी बनने के लिए हमें शुरू से ही पढ़ाई के साथ–साथ ऐसे कौशल सीखने की ओर भी ध्यान देना चाहिए, जो आगे चलकर हमें आत्मनिर्भर बना सकें।

मदन एक धनिक व्यापारी का पुत्र था। जो बड़ा होने पर भी अपने पिता के व्यापार में कोई सहयोग नहीं करता था बल्कि अपने पिता द्वारा कमाए हुए धन का भरपूर आनन्द उठाता था। उसने कभी यह सोचा ही नहीं था कि पिता के न रहने पर धन कहाँ से आएगा। मेरा भविष्य कैसा होगा? मुझे क्या करना चाहिए? इत्यादि। वह मौजमस्ती के सिवा कुछ सोचता ही नहीं था जबकि उसके पिता को उसकी दिन–रात चिन्ता सता रही थी कि वह कौन–सा समय आएगा जब वह अपने पैरों पर खड़ा होगा। क्या यह हमेशा इसी तरह मुझ पर निर्भर रहेगा?

एक दिन पिता ने उसे बुलाया और प्यार से कहा–'बेटा, तुम भी कुछ मेहनत करके कमाना सीखो।' मदन के मन में कुछ इच्छा जागृत हुई और कह दिया–ठीक है पिताजी। अगले दिन वह घर से कुछ कमाने की नीयत से निकला। अनुभव न होने के कारण वह पूरे दिन में 20 रुपये मात्र कमा पाया। शाम को जब वह घर लौटा तो धूल–धूसरित मुँह, मैले कपड़े, बदन पर दिन भर की थकान स्पष्ट झलक रही थी। किन्तु मन में बहुत खुशी थी मेहनत से कमाए 20 रुपये के लिए। पिता ने व्यस्तता दिखाते हुए और उसकी ओर न देखते हुए कहा–जाओ, इन्हें कुएँ में फेंक दो? वह बोला–क्यो? मैं इनको बेकार नहीं करना चाहता। यह मेरी मेहनत की कमाई है। पिता ने कहा–बेटा, घर में जिस पैसे को तुम उड़ाते हो, वह सब इतनी ही मेहनत से कमाया हुआ पैसा है। मदन अन्दर से पानी–पानी हुआ जा रहा था। आज उसे अपनी गलतियों का अहसास हुआ कि मैं इतना बड़ा होकर भी अपने पिता पर निर्भर रहा। वह सोच रहा था कि मैं स्वयं स्वावलम्बी बनकर पिता का सहारा बनूँगा। पिता ने उसका ध्यान तोड़ते हुए कहा– बस बेटा, मैं इसी समय का इन्तजार कर रहा था, तुम्हें कब यह अहसास होगा कि तुम्हें भी आत्मनिर्भर होना चाहिए। अब मुझे विश्वास हो गया है कि तुम स्वयं स्वावलम्बी बनकर मेरे बुढ़ापे का भी सहारा बनोगे। उस दिन से मदन की जिन्दगी बदल गई।

प्यारे बच्चो! पिता का उद्देश्य मदन का हृदय दुखाना नहीं था अपितु उसको स्वावलम्बी जीवन के प्रति जाग्रत करना था। एक अच्छा आदर्शपूर्ण जीवन जीने हेतु इस आदत व गुण को प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

अभ्यास

पाठ से

1. 'स्वावलम्बन' शब्द का क्या अर्थ है?
2. अपने जूते पॉलिश करने वाले व्यक्ति कौन थे?
3. माँ ने रमेश को किस कार्य के लिए भेजा?
4. राज स्वयं गेहूँ पिसवाने क्यों गया था?
5. मदन के पिता क्या काम करते थे?

आपकी समझ

1. रमेश की परेशानी का क्या कारण था?
2. सुखपूर्वक जीवन कैसे जीया जा सकता है?
3. पिता को किस बात की चिन्ता सता रही थी?
4. मदन का जीवन किस प्रकार बदला?
5. रमेश को अपनी गलती का अहसास कब हुआ?

कुछ करने के लिए

1. छोटे–बड़े दैनिक कार्य स्वयं करने का प्रयास करें।
2. घरेलू कार्यों में माता–पिता को सहयोग दें। अपनी कक्षा, विद्यालय तथा आस–पास के परिवेश की साफ–सफाई व पेड़–पौधों के रखरखाव की जिम्मेदारी उठाएँ।

अध्यापक के लिए

1. शिक्षक विद्यार्थियों को अपना कार्य स्वयं करने के लिए प्रेरित करें छात्र एक छोटी दैनन्दिनी बनाएँ और उसमें किए हुए कार्यों का उल्लेख करें।
2. अध्यापक विद्यार्थियों से ऐसे कार्यों की चर्चा करें जिन्हें वे स्वयं न करके अपने माता–पिता से करवाते हैं।

संसार में अपने पंखों को फैलाना सीखो क्योंकि दूसरों के पंखों के सहारे उड़ना सम्भव नहीं। – इकबाल

16 जन–जन को यही सन्देश, नशा मुक्त हो अपना देश (भाग – 3)

कक्षा 6 व 7 में आपने धूम्रपान व शराब के नशे से होने वाले दुष्प्रभावों के विषय में जाना व इसकी रोकथाम व बचाव के प्रति सजग हुए। इस अध्याय में कुछ अन्य मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्प्रभावों व इनकी रोकथाम को जानेंगे। आज हमारा समाज भयानक मादक द्रव्यों के व्यापक दुरुपयोग के दौर से गुजर रहा है। इसका एक मुख्य कारण यह भी है कि इनकी पूर्ण जानकारी के अभाव में हमारा विशाल युवावर्ग मादक द्रव्यों के मकड़जाल में फँसकर अपना और अपने देश का भविष्य नष्ट कर रहा है। हमारी युवा पीढ़ी मानसिक तनाव एवं सही मार्गदर्शन के अभाव में अपने मुख्य लक्ष्य से भटक रही है।

ekn d inkFkk d i dkj & जिन मादक पदार्थों का दुरुपयोग होता है उन्हें उनके केंद्रीय तंत्रिका–तंत्र पर पड़ने वाले प्रभावों के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है। नीचे कुछ समूह दिए गए हैं–

leg	ekn d inkFk	iHkko tks mi;ksxdrk vuHkko djrk g
उत्तेजक	तंबाकू, कोकीन, गुटका	अधिक मात्रा में लेने से चिंता या भय व्याप्त हो सकता है।
शमक	शराब, बार्बिटयूरेट, नींद की गोलियाँ, श्वास द्वारा लिए जाने वाले पदार्थ जैसे– पेट्रोल, सुधारक स्याही।	मस्तिष्क की क्रियाशीलता को धीमी कर देते हैं।
उपशामक	निद्राजनक जैसे मैनट्रेक्स, डॉरिडेन	शरीर में कमजोरी, उलटी, पसीना आ सकता है। अधिक मात्रा में लेने से मृत्यु तक हो सकती है।
पीड़ानाशक	अफीम, मॉर्फीन, हेरोइन, ब्राउन शुगर।	अधिक सेवन बेहोशी, उलटी, बेचैनी उत्पन्न करता है।
भांग	भांग, गाँजा, चरस	व्यक्ति भ्रमित बेचैन, उत्तेजित हो जाता है, याददाश्त कमजोर हो जाती है।
भ्रांतिकर	एल.एस.डी.	अधिक पसीना आना, उच्च रक्तचाप, धुंधलापन, ऐंठन का अनुभव कर सकते हैं।

Ekknd inkFkk d n#i;kx d ifj.kke –

मादक पदार्थों के दुरुपयोग के बहुत से अल्पकालीन व दीर्घकालीन प्रभाव पड़ते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं।

- मादक पदार्थों के दुरुपयोग से व्यक्ति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से दूसरों पर निर्भर हो जाता है।
- लम्बे समय तक मादक पदार्थों का उपभोग करने पर व्यक्ति अपनी भावनाओं पर नियंत्रण खो बैठता है, अर्थात् उपभोगकर्ता क्रोधित, हिंसक, निराश या चिंतित हो सकता है।
- मादक पदार्थों का दुरुपयोग परिवार में समस्याएँ उत्पन्न करता है, इसमें केवल विश्वास ही नहीं चला जाता बल्कि संबंधों में भी दरारें उत्पन्न हो जाती हैं।
- मादक पदार्थों के दुरुपयोग के परिणामस्वरूप व्यक्ति, मित्रों और परिवार को खो बैठता है जिससे वह अलग–थलग और अकेला पड़ जाता है।
- उपभोगकर्ता स्कूल/कॉलेज/कार्यस्थल पर अच्छा काम करने के लिए कम प्रेरित होता है साथ ही उसकी स्मृति और स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता भी प्रभावित होती है।
- एक प्रमुख प्रभाव आर्थिक होता है। मादक पदार्थों के लिए उपयोगकर्ता अपनी दवाओं की पूर्ति के लिए पैसा इत्यादि चुराना शुरु कर देता है।
- मादक पदार्थों का उपयोगकर्ता स्वास्थ्य के गंभीर परिणामों से भी पीड़ित हो सकता है। उदाहरण के लिए उनकी अनियमित आहार व अस्वच्छता की आदतें होती हैं जिससे वे बीमार पड़ते हैं इससे उनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कमज़ोर हो जाती है। जिससे उनमें बीमारियों और संक्रमण की संभावनाएँ बढ़ जाती है।

eknd inkFkk d lou l cpu d mik;

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम सब स्वस्थ जीवन शैली को अपनाकर स्वयं के विकास के साथ–साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति में सहयोगी बनें। स्वस्थ जीवन शैली का अर्थ है–ऐसी जीवनचर्या जिसमें भ्रमण, योग, व्यायाम, अच्छा व सादा खान–पान, फलों, सब्जियों का सेवन तथा व्यवहार में संयम व शिष्टता को स्थान दिया जाए। विद्यार्थियों को भी आरम्भ से ही इसी प्रकार की जीवन शैली अपनानी चाहिए ताकि वे एकाग्रचित होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में आगे

बढ़ सकें और नशे जैसी बुराइयों के शिकंजे से दूर रह सकें। बालकों को नशे की कुप्रवृत्ति से दूर रखने के लिए तथा स्वस्थ जीवनशैली को अपनाने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने चाहिएँ–

1. tkx:drk & नुक्कड़ नाटक, पोस्टर व स्लोगन प्रतियोगिताओं, प्रश्नपेटी जैसे – विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके, प्रेरणादायक कहानियों व फिल्मों द्वारा नशे के दुष्परिणामों के प्रति बच्चों को सजग व सचेत किया जा सकता है।

2. ufrd eY;k dk fodkl & परिवार में माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्य व विद्यालय में अध्यापक प्रारम्भ से ही बालकों में ऐसे नैतिक व चारित्रिक गुणों का विकास करें कि बालक आन्तरिक रूप से इतना सबल बने कि वह नशे जैसी बुरी लत को 'ना' कह सके।

3. ldkjkRed lkp dk fodkl & धार्मिक पक्ष व्यक्ति के जीवन को मानसिक सन्तुलन तथा आत्मिक शान्ति प्रदान करता है तथा वह धार्मिक सुविचारों से अपने जीवन की सोच को सकारात्मक बना सकता है।

4. [ky&dn & खेलकूद द्वारा एक ओर जहाँ विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन पैदा होता है, दूसरी ओर वह अपनी ऊर्जा को सही दिशा में प्रवाहित करता है अतः घर व स्कूल में बच्चों को किसी न किसी रूप में खेलकूद में प्रतिभागिता करनी चाहिए।

5. ifjokj dh Hkfedk & परिवार के सभी सदस्यों का आपसी सहयोग व संवाद अत्यन्त आवश्यक है ताकि बच्चे अपनी रुचियों–अरुचियों तथा अन्य भावनाओं को स्वतन्त्र रूप से व्यक्त कर सकें।

6. ;kx o ik.kk;e & योग मानसिक व शारीरिक तनाव को दूर करने में काफी लाभदायक है। यह व्यक्ति को तन्दरुस्त बनाता है। अतः योग को स्कूलों में एक अनिवार्य गतिविधि के रूप में लागू किया जाना चाहिए ताकि बच्चे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहें।

केस अध्ययन

15 वर्षीय संदीप को स्मैक के नशे की आदत पड़ गई थी। उसे अपनी नशे की खुराक रोज़ लेनी पड़ती थी। जब स्मैक खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं होते थे तो वह अपने माता–पिता को धमकी देता कि यदि उन्होंने पैसे नहीं दिए तो वह आत्महत्या कर लेगा या घर को जलाकर खाक कर देगा। इस घोर निराशा की अवस्था में उसने घर की चीज़ें बेचना शुरु कर दिया। मन ही मन उसे बुरा भी लगता था और यह महसूस होता था कि उसका परिवार उजड़ रहा है परंतु वह मज़बूर था।

परिचर्चा के लिए प्रश्न

1. संदीप के नशे की आदत के लिए कौन उत्तरदायी है?
2. संदीप के पास स्मैक से बचने के लिए क्या विकल्प था?
3. यदि तुम संदीप के स्थान पर होते तो क्या करते?
4. संदीप के माता–पिता को उसकी नशे की आदत छुड़ाने में किस प्रकार सहयोग करना चाहिए?

17 1857 की क्रान्ति में 'रोहनात' का योगदान

हरियाणा राज्य के पश्चिम में स्थित आधुनिक भिवानी जिले में एक गाँव है–रोहनात। इस गाँव के वीर सपूतों ने सन् 1857 की महान क्रान्ति में अतुल्य योगदान दिया। रोहनात की विद्रोह में भूमिका को समझने के लिए हांसी, हिसार व तोशाम की गतिविधियों की जानकारी आवश्यक है। 10 मई, 1857 के बाद उत्तरी भारत में अंग्रेजों के विरुद्ध बग़ावत हो गई थी। हिसार में इसकी सूचना 27 मई को मुहम्मद आज़म द्वारा दी गई।

ØkfUr dk vkjEHk%

सन् 1857 में रोहनात गाँव हिसार कमिश्नरी के अंतर्गत था। हिसार में क्रान्ति का नेतृत्व हुकुमचंद जैन, मुनीर बेग़, फक़ीरचंद, रुकुनुद्दीन मौलवी, शहबाज बेग, गुरबक्श सिंह तथा मुहम्मद आज़म कर रहे थे। योजना के अनुसार 29 मई, 1857 को दादरी के रजब बेग के नेतृत्व में एक घुड़सवार दस्ते ने तोशाम के रास्ते रोहनात, मंगाली व पुट्ठी के लोगों को साथ लेकर 11 बजे हांसी छावनी पर हमला कर दिया। उन्होंने वहाँ पर अंग्रेजी शासन को समाप्त करके उसी दिन एक बजे हिसार के जिला मुख्यालय पर भी हमला किया जिसमें तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर वैडरबर्न व तहसीलदार थॉमसन मौके पर मारे गए। इसके बाद क्रान्तिकारियों ने जेल तोड़कर बन्दियों को मुक्त कराया, किले पर आक्रमण करके उस पर कब्जा किया तथा खजाने में रखे 1,70,000/– रुपये लूट लिए।

ØkfUr dk foLrkj%

अंग्रेज सरकार द्वारा पश्चिमी हरियाणा क्षेत्र के लिए जनरल वॉर्न कोर्टलैंड को नियुक्त किया गया। 2 अगस्त को हाँसी में कोर्टलैंड व स्थानीय लोगों के बीच संघर्ष हुआ। स्थानीय लोगों का नेतृत्व हुकुमचन्द जैन व मुनीर बेग कर रहे थे। इस संघर्ष में रोहनात गाँव के भिरडी दास बैरागी, रूपा खाती व नोन्दा राम जाट की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही। कोर्टलैण्ड के हांसी में होने का लाभ उठाकर क्रान्तिकारियों ने मौहम्मद आज़म के नेतृत्व में संगठित होकर 3 अगस्त को हिसार पर कब्जा कर लिया। कोर्टलैण्ड को हांसी छोड़नी पड़ी किन्तु शीघ्र ही उसने 8 अगस्त को हिसार के किले पर फिर से कब्जा कर लिया। इस

तरह किले पर अंग्रेजों का तथा किले से बाहर के क्षेत्र पर क्रान्तिकारियों का नियन्त्रण था। 19 अगस्त, 1857 को किले के नागौरी गेट पर एक महत्त्वपूर्ण युद्ध हुआ। अंग्रेजी तोपों व बंदूकों के सामने स्थानीय लोगों के गंडासे, जेली व कुल्हाड़ियाँ अधिक देर न टिक सके। अंततः इस संघर्ष में 300 क्रान्तिकारी मौके पर ही मारे गए, 180 की लाशें समीपवर्ती क्षेत्र में मिलीं जबकि 123 लोगों को पकड़कर रोड–रोलर के नीचे कुचल दिया गया। 25 अगस्त को रोहनात, नलवा, हाज़िमपुर आदि गाँवों के क्रान्तिकारियों ने तोशाम पर कब्जा कर लिया। किन्तु शीघ्र ही 30 अगस्त को कोर्टलैंड ने पुनः तोशाम पर कब्जा कर लिया।

30 सितम्बर को प्रातःकाल हांसी के समीपवर्ती गाँव जमालपुर में युद्ध हुआ जहाँ हार के बाद क्रान्तिकारी पीछे हटे तथा रोहनात गाँव में जम गए। कड़े संघर्ष के बाद कोर्टलैंड को यहाँ क्रान्ति पर काबू पाने में सफलता मिली। उसने गाँव को आग के हवाले कर दिया जिसमें कुछ महिलाओं ने जान बचाने के लिए बच्चों सहित कुएँ में छलाँग लगा दी।

रोहनात स्थित ऐतिहासिक कुँआ जहाँ महिलाएं बच्चों सहित तोपों के भय से प्राण रक्षा हेतु कूद गई

ØkfUr dk neu%

30 सितम्बर के बाद आगामी चार माह तक यहाँ कोर्टलैंड ने खूब अत्याचार किए। बग़ावत में शामिल लोगों को उनके गाँव के बाहर सार्वजनिक स्थानों पर पेड़ों पर लटकाकर फाँसी दी गई तथा परिवार के सदस्यों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि इन मृत शरीरों को आगामी आदेश तक पेड़ों से न उतारा जाए। लोगों को हांसी लाकर रोड़–रोलर के नीचे कुचला गया। रोहनात के स्वामी भिरड़ी दास व रूपा खाती को सार्वजनिक रूप से तोप से बाँधकर उड़ा दिया गया। नोन्दा राम जाट को हांसी ले जाकर रोड–रोलर के नीचे कुचल दिया गया। सरकार ने सख्त आदेश जारी करके, लोगों को इनके परिवार को किसी भी रूप में साथ न देने का फरमान सुना दिया। भिरड़ी दास के परिवार ने गाँव छोड़ दिया तथा वे ईसरवाल गाँव के पास रोढ़ा नामक गाँव में बस गए। वहाँ उन्होंने भिरडी दास के नाम पर एक मन्दिर भी बनवाया।

इस गाँव पर अंग्रेजी दमन की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। सूची बनाकर इस क्षेत्र के 133 लोगों को फाँसी दी गई। प्रस्तुत लोकगीत की ये पंक्तियाँ अंग्रेजों के अत्याचार पर प्रकाश डालती हैं –

''हांसी आली लाल सड़क पै, हजारां गए लिटाए थे
सड़क बनी थी नदी खून की, न्यूं रोलर फिरवाए थे,
रुहणात गाम मैं कोल्हू चाले, भोत घणे पिड़वाए थे,
चौबीसी के लीडर सारे महम मैं मरवाए थे।''

निम्न पंक्तियाँ भी इसी क्षेत्र की दर्दनाक कहानी का वर्णन करती हैं –

''बख्त बदलग्या अंग्रेज़ सम्भलग्या, तोपां के मुंह फेर दिए,
देश भगत जिब ढीले पड़गे दुश्मन नैं यैं घेर लिए,
रूहणात गाम मैं कोल्हू चाल्या, पीड़–पीड़ कै गेर दिए,
लाल सड़क हांसी आली पै, कर वीरां के ढेर दिए।''

neu d i'pkr%

क्रान्ति के दमन के बाद समूचे रोहनात गांव को दण्डित करने के लिए यहाँ की ज़मीन नीलाम करने का फैसला किया गया। ज़मीन संबंधी विभिन्न तरह की सूचनाओं को प्राप्त करके फाइनैन्शियल कमिश्नर पंजाब लाहौर द्वारा पत्र संख्या 1076 दिनांक 12 अप्रैल, 1858 को नीलामी का आदेश ज़ारी कर दिया गया। नीलामी की कार्यवाही 20 जुलाई, 1858 को जिलाधीश जनरल बिन तहसीलदार हांसी की देखरेख में हुई। इसमें गाँव की आबादी व तालाब का 13 बीघा 10 बिसवे जमीन को छोड़कर पूरा गाँव रुपये 8100/– में नीलाम कर दिया गया। इस नीलामी के अवसर पर यह स्पष्ट कर दिया गया कि तालाब के किनारे व मार्गों पर खड़े पेड़ भी मूल निवासियों (बागियों) के नहीं होंगे, बल्कि जिसका खेत उसके साथ लगता होगा, वह उनका मालिक होगा। यह जमीन कुल 61 लोगों ने खरीदी। नीलामी के रुपयों के कोष में जमा होने के बाद सरकार द्वारा गाँव के लोगों को उनके खेतों से बेदखल कर दिया गया। इसी दस्तावेज़ में यह भी स्पष्ट किया गया कि इस जमीन के विरुद्ध किसी तरह की कोई अपील नहीं होगी। यहाँ के निवासी स्थायी तौर पर बागी माने जाएँगे तथा इनकी संतान को बागियों की संतान कहा जाएगा। इस घटना के बाद भी केवल आबादी क्षेत्र में मूल निवासी बचे तथा जब तक अंग्रेजी शासन रहा, वे निरन्तर भेदभाव का शिकार होते रहे।

इस प्रकार देशभक्ति की इतनी बड़ी कीमत चुकाने वाला यह गाँव व इसके वीर सपूतों की गाथाएँ प्रदेश में हमेशा आत्मगौरव व प्रेरणा का स्रोत रहेंगे।

अभ्यास

पाठ से

1. हिसार जिले व रोहनात गाँव से क्रान्ति का नेतृत्व करने वाले प्रमुख नेताओं की सूची बनाओ।
2. 1857 की क्रान्ति में रोहनात गाँव के योगदान पर नोट लिखो।
3. रोहनात व हिसार में क्रान्ति के दमन पर चर्चा करो।

आपकी समझ

अग्रेज़ सरकार द्वारा रोहनात गाँव की ज़मीन नीलाम कर दिए जाने के पश्चात् वहाँ के निवासियों को क्या कष्ट झेलने पड़े होंगे? चर्चा करो।

कुछ करने के लिए

1. हरियाणा के मानचित्र पर रोहनात गाँव को चिन्हित करो।
2. पुस्तकों व इंटरनेट आदि की सहायता से 1857 की क्रान्ति में हिसार जिले विशेषतः रोहनात गाँव के प्रमुख क्रान्तिकारियों पर जानकारी एकत्रित करके सचित्र परियोजना तैयार करो।
3. 1857 की क्रान्ति में 'रोहनात' गाँव के योगदान पर लघु नाटिका तैयार करके उसका मंचन करो।

अध्यापक के लिए

1. विद्यार्थियों के साथ अपने राज्य के अन्य क्षेत्रों में 1857 की क्रान्ति से जुड़ी घटनाओं को साझा करो।
2. इतिहास विषय में कक्षा आठवीं की पाठ्य पुस्तक में 1857 की क्रान्ति संबंधी पाठ *tc turk cxkor djrh g* के संदर्भ में रोहनात गाँव के क्रान्ति में योगदान विषय पर कक्षा में चर्चा करो।

18 रेज़ांग ला : ज़रा याद करो कुर्बानी

इतिहास के पन्नों में कुछ तारीखें हमेशा के लिए अमर हो जाती हैं। 18 नवम्बर एक ऐसी ही तारीख है, जब भारतीय सैनिकों ने अपने अदम्य साहस एवं प्रेरक बलिदान की अनूठी मिसाल कायम की। 18 नवम्बर, 1962 को भारत–चीन के बीच हुए इस युद्ध में भारतीय सेना की 13 कुमाऊँ रेजीमेंट की चार्ली कम्पनी के 114 जवानों ने कठिन परिस्थितियों में अदम्य साहस का परिचय देते हुए अपनी अंतिम सांस तक मातृभूमि की रक्षा की एवं प्राणों का बलिदान दिया।

रेवाड़ी स्थित रेज़ांग ला युद्ध का स्मारक

यह युद्ध रेज़ांग ला में लड़ा गया। रेज़ांग ला भारत के जम्मू–कश्मीर राज्य के लद्दाख क्षेत्र में चुशूल घाटी के दक्षिणपूर्व में उस घाटी में प्रवेश करने वाला एक पहाड़ी दर्रा व सामरिक महत्त्व की चौकी है। इसकी औसतन ऊँचाई सोलह हजार फुट है। 1962 के भारत–चीन युद्ध में इस चौकी पर तैनात लगभग 120 जवानों की चार्ली कम्पनी का नेतृत्व, मेजर शैतान सिंह कर रहे थे। इस सेना में बड़ी संख्या में सैनिक अहीरवाल क्षेत्र से थे।

17–18 नवम्बर की रात्रि में चीनी फौज ने रेज़ांग ला के आस–पास चढ़ाई कर दी। उस समय यहाँ का तापमान शून्य से बहुत नीचे था। असामान्य व खून जमा देने वाली कडाके की ठंड थी। सुबह पौ फटने से पहले ही चीनी सैनिकों ने हमला कर दिया। भारतीय सैनिकों ने जबरदस्त जवाबी कार्यवाही की। इस युद्ध में शत्रु सेना के बहुत से सैनिक मारे गए व घायल हो गए। चीनी सैनिकों के लिए पीछे से मदद पहुँच जाने पर उन्होंने एक और जबरदस्त हमला किया। दूर–दूर तक चीनी सैनिकों की लाशें बिछी थीं। कई जगह हमलावरों को अपने ही सैनिकों की लाशों पर से गुज़रना पड़ा। अब चीनी फौज ने भारतीय चौकी को घेर लिया व भारी बम्बारी शुरु कर दी। वे भारतीय सैनिकों की अपेक्षा संख्या में बहुत अधिक थे तथा उनके पास हथियार व गोला–बारुद भी काफी उन्नत किस्म के थे। फिर भी हमारे जांबाज़ सिपाहियों ने हिम्मत नहीं हारी। वे मोर्चे पर डटे रहे तथा उन्होंने अपने से कई गुना ज्यादा संख्या में चीनियों को मौत के घाट उतारा। वे आखिरी सांस तक दुश्मन से लोहा लेते रहे।

इसीलिए इस युद्ध को 'आखिरी गोली व आखिरी सैनिक' का युद्ध भी कहा जाता है। इस कम्पनी के अधिकांश जवान शहीद हो गए किन्तु चीन के नापाक इरादों को सफल नहीं होने दिया।

फरवरी 1963 में इंटरनेशनल रेडक्रास के जरिए एक भारतीय दल वहाँ पहुँचा। उन्हें यहाँ बर्फ की चादर में लगभग 96 शहीदों के पार्थिव शरीर युद्धमुद्रा में मिले। अनेक शहीदों ने मृत्यु के इतने समय बाद तक भी बंदूक व हथियार कसकर पकड़े हुए थे। इससे साबित होता है कि उन्होंने अंतिम सांस तक युद्ध किया था।

मेज़र शैतान सिंह के पार्थिव शरीर को अंतिम संस्कार के लिए जोधपुर भेजा गया तथा शेष शहीदों का अंतिम संस्कार मोर्चे पर ही किया गया। यहाँ उनकी शहादत को चिरस्थाई एवं प्ररेणापुंज बनाने के लिए एक स्मारक बनाया गया। अहीर–धाम नामक इस युद्ध स्मारक पर थॉमस बैबिंगटन मैकाले की कविता 'होरेशियस' के प्रेरक अंश इस शहादत का भावपूर्ण स्मरण कराते है।

देश व दुनिया में अपनी अनूठी शहादत परम्परा और सैन्य संस्कृति के लिए प्रख्यात वीरभूमि हरियाणा में अनेक स्थानों पर इन वीर शहीदों की स्मृति में स्मारक एवं स्मृतिस्थल बनाए गए है। यहाँ प्रतिवर्ष 18 नवम्बर को रेज़ांग ला के इन शहीदों को अनेक संगठनों के माध्यम से याद किया जाता है।

रेवाड़ी जिले में गाँव धवाना के दो सगे भाईयों, वीर–चक्रा नायक सिंहराम तथा सिपाही रामकुमार की मार्मिक शहादत के किस्से क्षेत्र की शौर्य–गाथाओं में सुने जाते हैं। जैसे–

''एक कोख के दूणों लाल,
भारत माँ की बणगै ढाल।''

इसी प्रकार इन वीर शहीदों की याद में कुछ आल्हा गीत भी प्रचलित हैं। जैसे–

''खूब लड़े वै वीर गाभरू,
खूब मिलाई सुर मै ताल।
टुकड़ी एक सौ चौबीस की,
या कायम कर गई मिसाल।
छाती पै सबने गोली खाई,
फैल करी बैरी की चाल।''

इस युद्ध के जांबाज़ रणबांकुरों की वीरता एवं बलिदान के लिए भारत सरकार द्वारा चार्ली कम्पनी के कमांडर मेजर शैतान सिंह को मरणोपरान्त परमवीर चक्र, आठ जवानों को वीर चक्र तथा चार को सेना मैडल से अलंकृत किया गया।

मेज़र शैतान सिंह तथा उनकी चार्ली कम्पनी के सैनिकों के अतुल्य बलिदान की गाथाएँ आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करती रहेंगी।

अभ्यास

पाठ से

1. रेज़ांग ला में तैनात भारतीय सेना की 13 कुमाऊँ रेजीमेंट की चार्ली कम्पनी का नेतृत्व किसने किया व इसमें शामिल अधिकतर सैनिक किस क्षेत्र से थे?

2. रेज़ांग ला के युद्ध स्मारक को किस नाम से जाना जाता है? इस पर किस कवि की कविता के प्रेरक अंश लिखित हैं?

3. रेज़ांग ला में शहीद सैनिकों को भारत सरकार की ओर से किन विशिष्ट चक्र व मैडलों से सम्मनित किया गया?

आपकी समझ

1. रेज़ांग ला की भौगोलिक स्थिति का वर्णन करते हुए लिखो कि यह क्षेत्र सैनिकों के लिए किस प्रकार चुनौतीपूर्ण है?

2. रेज़ांग ला में शहीद सैनिकों के हाथों में मरणोंपरान्त भी हथियारों की जकड़ किस बात का द्योतक है?

3. रज़ांग ला के युद्ध को 'आखिरी गोली व आखिरी सैनिक' का युद्ध क्यों कहा जाता है?

कुछ करने के लिए

1. पुस्तकों, इंटरनेट व अन्य स्रोतों से रेज़ांग ला के युद्ध व युद्ध में भाग लेने वाले सैनिकों के बारे में और जानकारी एकत्रित करो व परियोजना तैयार करो।
2. रेज़ांग ला व कारगिल युद्ध का तुलनात्मक अध्ययन करो।
3. रेज़ांग ला युद्ध से संबंधित गीत, रागनियाँ व कविताएँ एकत्रित करो तथा कक्षा में अन्य विद्यार्थियों के साथ साँझा करो।

अध्यापक के लिए

विद्यार्थियों के साथ देश–प्रेम व देश के प्रति समर्पण से जुड़ी कुछ अन्य ऐतिहासिक घटनाओं को साँझा करो।

19 मुझे यह अच्छा नहीं लगता

आज शनिवार का दिन है। इस दिन हमारे स्कूल में बाल–सभा होती है। बाल–सभा में सभी कक्षाओं के बच्चे होते हैं। स्कूल के मैदान में बच्चों के सामने कुर्सियों पर हमारी अध्यापिकाएँ एवं अध्यापकगण बैठते हैं। बाल–सभा में आज हमारी सीमा मैडम ने कनिका से कक्षा–4 की परिवेश अध्ययन की पाठ्य–पुस्तक में पृष्ठ संख्या 12 पर *e|> ;g vPNk ugh yxrk* नामक पाठ्यांश पढ़ने को कहा। कनिका ने पढ़ना शुरु किया–

''मीना और रितु स्टापू खेलकर घर लौट रही थीं। मेरे घर चलो न, मीना ने रितु को खींचते हुए कहा। तुम्हारे मामा तो घर पर नहीं होंगे? अगर वे हों, तो मैं तुम्हारे घर नहीं चलूँगी, रितु ने जवाब दिया। पर क्यों? मामा को तुम अच्छी लगती हो। वे कह रहे थे– अपनी सहेली रितु को घर लाना। मैं दोनों को खूब सारी चॉकलेट खिलाऊँगा। रितु ने मीना से अपना हाथ छुड़ाया और बोली– तुम्हारे मामा से मुझे डर लगता है। वे मेरा हाथ पकड़ते हैं, तो मुझे अच्छा नहीं लगता है। यह कहकर रितु अपने घर चली गई''।

सीमा मैडम – बच्चो, क्या तुम्हें भी कभी किसी का छूना बुरा लगा है?

अंजू – मैडम, जब रिक्शा वाले अंकल मुझे गोदी में लेकर रिक्शा में बिठाते हैं तो मुझे अच्छा नहीं लगता।

सीमा मैडम – क्या तुमने इस बारे में अपने माता–पिता से बात की है? यदि नहीं तो हम आज ही जाकर उनसे बात करेंगे।

राहुल – मैडम एक बार मेरे पड़ोस के भैया ने अकेले में ले जाकर मुझे गलत तरीके से छूने की कोशिश की। लेकिन मैं वहाँ से भाग गया।

सीमा मैडम – शाबाश राहुल। तुम्हारा शरीर सिर्फ तुम्हारा अपना है। यदि कोई भी तुम्हारे निजि अंगों को छूने की कोशिश करे तो तुम्हें बिलकुल नहीं डरना चाहिए और ये तीन काम करने चाहिए –

1. चिल्लाकर कहोगे – 'नहीं' **(No)**

2. उस स्थान से भाग जाओ।

3. अपने माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी अथवा अध्यापिका को जाकर इस बारे में बताओ।

आओ हम मिलकर ये गतिविधियाँ करें–

गतिविधि 1

ugh] **er djk** ''मुझे यह पसंद नहीं है, मैं चिल्लाऊँगा''।

हमें कहना चाहिए – ugh! **(No)!**

बिन्दुओं को मिलाओ और वाक्य को पूरा करो।

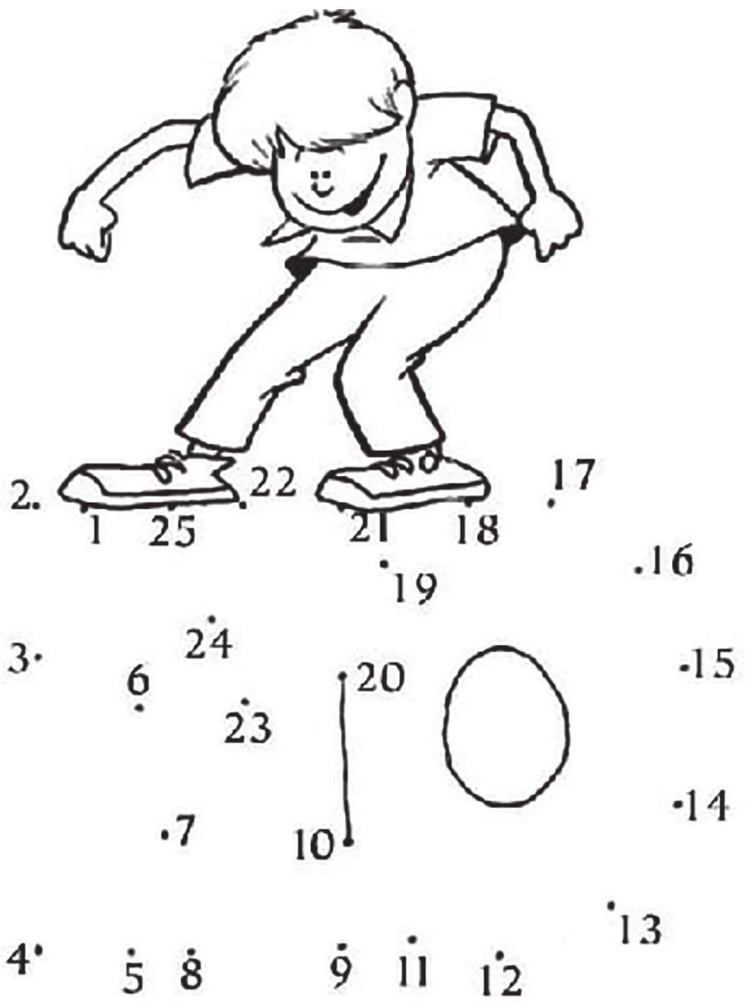

गतिविधि 2

हमारे आस–पास का घेरा, हमारा निजी घेरा है और यह केवल हमारा अपना है। यदि कोई हमारी सहमति के बिना हमारे निजि घेरे में प्रवेश करता है तो हम असहज महसूस करते हैं।

बिंदुओं को मिलाकर चित्र को पूरा करो–

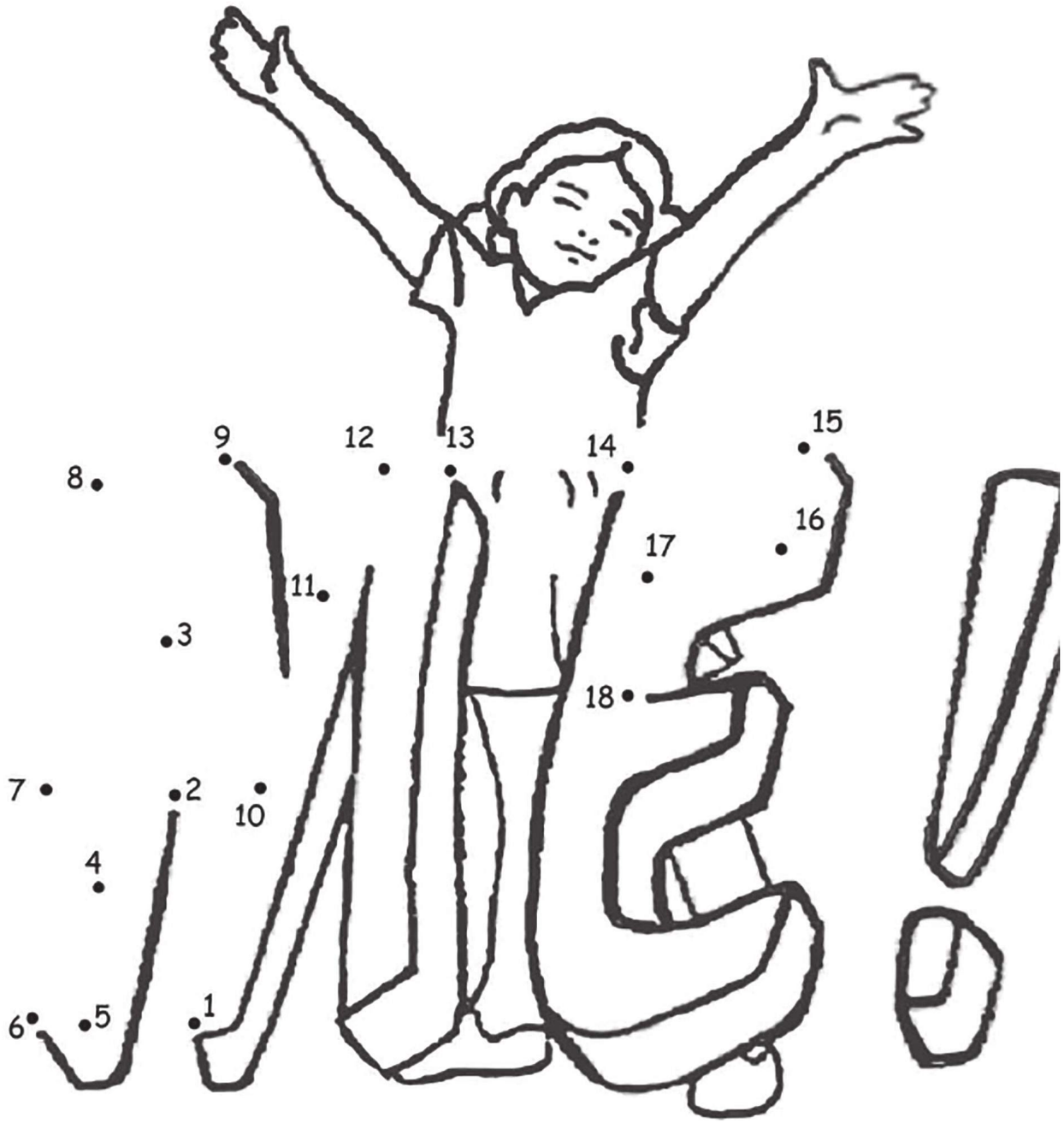

गतिविधि 3

प्यारे बच्चो, क्या तुम जानते हो कि हम इस प्रकार की विकट स्थितियों से बाहर निकलकर अपने–आप को सुरक्षित रख सकते हैं। कुछ ऐसे फोन न0 हैं, जिन्हें तुम जानो तथा आवश्यकता पड़ने पर उनका प्रयोग करो।

आओ उन्हें लिखें–

egÙoi.k Qku u0%

दादीजी – दादाजी	.....	नानीजी – नानाजी	.....
पड़ोसी 1.	.....	पडोसी 2.	.....
अंकल	.....	आँटी	.....
मम्मी	.....	पापा	.....
अध्यापिका/अध्यापक	.....	रिश्तेदार	.....

मेरा फोन न0 .....

vko';drk d le; ge fdl Qku djx

पुलिस .....

अग्नि शमन विभाग .....

एम्बुलेंस .....

यदि कोई तुम्हें बोलकर या शारीरिक रूप से परेशान करे, धोंस जमाए, गलत तरीके से छूए या यौन शोषण करे तो ऐसी स्थिति में मुसीबत के समय जरूरत पड़ने पर हमें 1098 न0 पर फोन करना है।

गतिविधि 4

''नहीं चलेगा, नहीं चलेगा,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।
हमको बिलकुल नहीं है भाता,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।

तुम कितने भी अच्छे हो पर,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।
भइया हो या अंकल हो पर,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।

हम अब नहीं डरेंगे तुमसे,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।
कह देंगे अब जाकर सबसे,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।

नहीं चलेगा, नहीं चलेगा,
छूना–छाना, नहीं चलेगा।''

अभ्यास

पाठ से

1. बाल सभा में अध्यापिका ने किस विषय पर चर्चा की ?
2. रितु नें मीना के घर जाने से मना क्यों किया ?
3. सताये जाने अथवा छेड़छाड़ की स्थिति में तुम किस फोन न0 पर संपर्क करोगे?
4. यदि कोई तुम्हारे निजि अंगों को छूने अथवा तुम्हें जबर्दस्ती पकड़ने की कोशिश करे तो तुम कौन से तीन कदम उठाओगे ?

आपकी समझ

1. शाम के समय घर के बाहर खेलने के लिए जाते समय, तुम अपनी सुरक्षा के लिए क्या सावधानियाँ बरतोगे ?

2. घर से स्कूल जाते समय दो रास्ते हैं – पहला, लंबा रास्ता–मुख्य सड़क जिस पर काफी लोग चल रहे हैं, दूसरा छोटा रास्ता – स्कूल के पीछे सुनसान पगडंडी का रास्ता ! तुम स्कूल जाने के लिए कौन सा रास्ता चुनोगे और क्यों ?

3. पाठ में तुमने रितु व मीना की बातचीत को पढ़ा। यदि तुम रितु के स्थान पर होते तो क्या करते ?

कुछ करने के लिए

यौन उत्पीड़न से सुरक्षा एवं बचाव के उपायों पर कुछ स्लोगन लिखो। उन्हें लकड़ी की तख्तियों पर चिपकाओ व अध्यापिका के मार्गदर्शन में रैली निकालो।

अध्यापक के लिए

समाचार पत्र/पत्रिकाओं व अन्य स्त्रोतों से यौन–उत्पीड़न संबंधी समाचारों की कतरने एकत्रित करो व उनके माध्यम से विद्यार्थियों को जागरूक करो। समाचारों का चयन बहुत सोच–समझकर करें। हमारा उद्देश्य बच्चों में इन घटनाओं के माध्यम से डर व असुरक्षा का भाव पैदा करना नहीं है अपितु उन्हें जागरूक, सावधान एवं सशक्त बनाना है।